अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 17 मार्च 2024

www.amritvichar.com

पर्व के साथ मनोरथ जुड़े हुए हैं। पर्व के साथ ऐतिहासिक पौराणिक संदर्भ जुड़े हुए हैं। पर्व में लोकजीवन की परंपरा है, पर्व में जातीय अस्मिता है। पर्व में इतिहास है। पर्व में जीवन दर्शन है। पर्व में अनुष्ठान हैं। पर्व में समष्टि चेतना है, समष्टि भाव है। समष्टि जीवन के एक बिंदु पर आकर पर्व और मेले एकाकार हो गए हैं, इतने अभिन्न कि उनको अलग नहीं किया जा सकता। जीवन में दुखों का कितना भार है। अकेले-अकेले न उठाया जा सकेगा। लोकमन ने समष्टि भाव को जगाया और पर्वों का उत्सव समारोह बना लिया। जीवन में समष्टि का भाव आया, मैं अकेला नहीं हूं। सब जी रहे हैं, सब के साथ मैं जी रहा हूं। पर्व में सभ्यता और संस्कृति की विकास यात्रा है। प्रत्येक पर्व के साथ कुछ कथाएं हैं, कुछ गीत हैं, गाथाएं हैं। प्रत्येक पर्व का कोई न कोई देवता है। प्रत्येक पर्व से सामाजिक सरोकार मंगलभाव और पुण्य की अवधारणा जुड़ी हुई है।

होली: यौवन के उन्माद का त्योहार

डॉ. राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

हिरण्यकशिपु कहता था कि ईश्वर मैं ही हूं, मेरे अतिरिक्त कोई भी ईश्वर नहीं है। होलिका दैत्यराज हिरण्यकशिपु की बहन थी। प्रह्लाद की बुआ। देवता के वरदान के रूप में उसके पास एक ऐसी चादर थी, जिस पर अग्नि का प्रभाव नहीं होता था। दैत्यराज हिरण्यकशिपु का आदेश था इसलिए वह विवश थी। प्रह्लाद को दंडित करने के लिए उसे गोद में लेकर वह अग्नि में बैठ गई,किंतु कुछ ऐसा हुआ कि चादर तो प्रह्लाद पर आ गई और होलिका जल गई। शायद यह होलिका का आत्मबलिदान था। राजा बलि परम उदार और दानी था,होलिका के प्रति उसका पूज्य- भाव कहिए, उसने होलिका के पूजा-पर्व को त्योहार का रूप दिया। बात तो उस मिथ्यादंभ और अभिमान की थी, इस प्रकार से होली निरंकुशता के विरुद्ध लोक का जयजयकार है।

होलिकादहन की रात्रि में महाराष्ट्र में कोली स्त्रियां चट्टे बजाकर नाचते हुए गाती हैं- हॉलु बाय हॉलु बाय तुझी पूजा कराशी करूं,तुझे पुंजेला काय काय आणु आई न कोंकण दे राला फिरीन नारली बनाला, नारली में नारल आनीन हालु बाय तुझे पुंजेला आईन श्रीवर्धन शहराला फिरीन सोपारी बनाला, श्रीवर्धन ची सोपारी आनीन हॉलु बाय तुझे पुंजेला जाईन बसई शहराला फिरीन केलिया बनाला, बसई ची केली आनीन हॉलु वाय तुझे पुंजेला ए होली माता। तुम्हारी पूजा किस तरह करूं और तुम्हारी पूजा में क्या-क्या अर्पित करूं। मैं कोंकण और सह्याद्रि जाऊंगी और नारियल के वनों में घूमूंगी और ए होली माता, मैं तुम्हारी पूजा के लिए नारियल लाऊंगी। मैं श्रीवर्धन नगर जाऊंगी और सुपारी के वनों में घूमूंगी। एए होली माता, तुम्हारे लिए बसई के केले लाऊंगी और तुम्हारी पूजा करूंगी। होली का जैसे-जैसे जनपदों में विकास हुआ, वैसे वैसे उसके साथ नए-नए प्रसंग जुड़ते चले गए। जैसे राजस्थान में इलोजी की कथा है,जो होली का प्रेमी अथवा मंगेतर था।

जब मैं लोकवार्ता का संग्रह-सर्वेक्षण करने निकला तो समामई की अम्माजी से घरगुली की कहानी पूछी,उसका विधि-विधान पूछा तो अम्माजी ने घरगुली का गीत गाकर सुना दिया। राजा बलि के द्वार मची रे होरी! राजा बलि के! अब तक तो मैं सोच रहा था,ब्रज की होली का संबंध राधा-कृष्ण से है। अब समझ नहीं आ रहा था कि ये राजा बलि होली में कहां से आ गए? लोकस्मृति के सूत्र इसी प्रकार से उलझे हुए होते हैं। स्वयं राजा बलि की ऐतिहासिकता लोकस्मृति के इन सूत्रों में उलझी हुई है। इतिहास का सत्य अपनी जगह पर है,जहां तक उसकी नजर जा सकती है, वह उसको देखता-परखता भी है, किंतु जीवन का विस्तार इतिहास के उस पार भी है। हालांकि भागवत के सातवें स्कंध में प्रह्लाद की कथा है, हिरण्यकशिपु की निरंकुशता और अहंकार का बहुत विस्तार है,वहां शंबरासुर का उल्लेख तो है,किंतु होलिका का नाम तक नहीं है। दसवें अध्याय के अंत में त्रिपुर-दहन का उल्लेख अवश्य है।

तमिलनाडु में होलिका दहन को कामदहन की पुराण कथा से जोड़ा जाता है। बंगाल में भी होलिका दहन में एक पुतला जलाया जाता है और श्रीकृष्ण की प्रतिमा के साथ उसकी परिक्रमा की जाती है। यह पुतला प्राकृत काम है,जबकि कृष्ण अप्राकृत-काम हैं -साक्षान्मन्मथमन्मथः!

कामदेव के मन को भी मथने वाले मदनमोहन। इसलिए आगे चलकर होली अथवा मदनोत्सव के समस्त केलिगीतों के नायक कृष्ण बन गए।

होली के उत्सव में यक्ष, राक्षस, पिशाच, देव, दैत्य, वैदिक तांत्रिक,आर्य-अनार्य, वैष्णव, शैव, शाक्त, हिंदू-मुस्लिम और सिख, उत्तर-दक्षिण की सभी संस्कृतियों का अंतर्भाव या समन्वय है। यक्षों की काम पूजा है, दैत्य संस्कृति की होलिका है, धूलिवंदन के समय पिशाच-नृत्य का उल्लेख है,शैवों का मदनदहन है,वैदिकों का नवसस्येष्टि-यज्ञ है,आगम परंपरा की दारुण रात्रि है।

प्रायः सभी कृष्णभक्त कवियों ने होली के पद लिखे हैं,धमार लिखे हैं। अकेले सूरदास ने ही वसंतलीला के सौ से अधिक पद लिखे हैं जिनसे तत्कालीन ब्रज और गोपों में होली की परंपराओं की विस्तृत जानकारी मिल जाती है। कितने प्रकार के गीत गाए जाते थे,कितने प्रकार के वाद्य थे। उद्दाम नृत्य होते थे। झूम-झूम झूमक सब गावत। झूमक लोकगीतों की एक शैली थी। देति परस्पर गारि मुदित मन! आम्रमंजरी हाथ में लेकर चांचर खेलते थे -सूरदास सब चांचर खेलें अपने-अपने टोलें। बाजत ताल मृदंग झांझ ढप। उन्मुक्त हास-परिहास होता था,कोउ न रहत घर घूंघटबारी। जोबन भार भरीं। सूरदासजी जिनमें गोपसंस्कृति में रगीपगी होली का सजीव चित्रण है। उन्होंने फाग को सब सुखों का सार बतलाया है। उन्होंने लिखा है कि फाग में हृदय का गुप्त अनुराग प्रकट हो जाता है।

सूरदास ने फागुन की पन्द्रह तिथियों का वर्णन किया है जिसमें सम्राट कामदेव का शासन है। लोकवेद की मर्यादा को टांग दिया है, हरिहोरी है की टेक साथ-साथ चल रही है। नृपति कहै सोइ कीजिये क्यों राखिये विवेक। अहो हरि होरी है। चतुर्भुजदास ने तो हो-हो-हो-हो को होली का मंत्र कह दिया है। होली के वर्णन में सूरदास ने लिखा है कि कुल की मर्यादा खूंटी पर टांग दी गई है। पद्माकर ने होली का वर्णन इस प्रकार से किया है-

फाग के भीर अभीरन तें गहि,गोबिंदै लै गई भीतर गोरी। भायी करी मन की पद्माकर ,ऊपर नाय अबीर की झोरी।

छीन पितंबर कंबर तें सु बिदा दई मीड कपोलन रोरी। नैन नचाय कही मुसकाय,लला फिर आइयो खेलन होरी। मुगलों के दरबार से लेकर वाजिद अली शाह तक की होलियां हैं। अब्दुल हलीम शरर ने लिखा है कि नवाब के यहां लोग जोगिया वस्त्र पहन कर होली देखने जाते थे। शाहतोराबअली (काकोरबी) जो कलंदर सूफी थे, उन्होंने कृष्ण के प्रेम में अनेक रचनाएं लिखी थीं। इनकी होरी का रंग न पूछो धूम मची है बिंदरावन मां श्यामबिहारी चित्र खेलारी खेल रहा होरी सखियन मां। रंग से भींज गई सब धरती, बिचलत पांव चलत कुंजन मां। अंग निहारत ताक के मारत दाग लगावत उजले बसन मां। अनेक मुस्लिम कवि और गायकों की होली रचनाएं शास्त्रीय-संगीत के रागों में निबद्ध हैं। सूफी-संत बुल्ले-शाह की होली रचना है होरी खेलूंगी कहकर बिस्मिल्लाह नाम नबी की रतन चढ़ी,बूंद पड़ी इल्लल्लाह। होरी खेलूंगी कहकर बिस्मिल्लाह होरी खेलूंगी कहकर बिस्मिल्लाह, नाम नबी की रतन चढ़ी, बूंद पड़ी इल्लल्लाह,रंग-रंगीली उही खिलावे,जो सखी होवे फना-फी अल्लाह, होरी खेलूंगी कह कर बिस्मिल्लाह। फज अज्कुरनी होरी बताऊं, वाश्करुली पीया को रिझाऊं, ऐसे पिया के मैं बल जाऊं, कैसा पिया सुब्हान-अल्लाह, होरी खेलूंगी कह कर बिस्मिल्लाह। सिबगतुल्लाह की भर पिचकारी,अल्लाहुस-समद पिया मुंह पर मारी, नूर नबी (स) डा हक से जारी, नूर मोहम्मद सल्लल्लाह, बुला शाह दी धूम मची है,ला-इलाहा-इल्लल्लाह, होरी खेलूंगी कह कर बिस्मिल्लाह। अनेक मुस्लिम कवि और गायकों की होली रचनाएं शास्त्रीय संगीत के रागों में निबद्ध हैं। मुस्लिम कवयित्री ताजबीबी ने होली की धमार लिखी थी-बहुरि,ढप बाजन लागे होली। रसखान ने तो होली का बड़ा जीवंत वर्णन किया है। जहांगीर के हरम में होली मनाई जाती थी,लंदन के संग्रहालय में 'जहांगीर-अलबम' में अबलहसन के द्वारा बनाया गया होली का चित्र है। इस चित्र में बादशाह और बेगम भी हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक चांचर गीत है -पियरी सोहै पियरी सोहै, अरी पियरी सोहै, देख जरे नयना पियरी सोहै, अपने बलमवा से मुखवा न खोले ली, भला आनक बलम भरि-भरि बयना, भरि-भरि बयना, पियरी सोहै अरी, तेरी पीले वस्त्रों को देखकर मेरे नयनों में तृषा जग जाती है। आंखें जलने लगती हैं। अपने बालम से तू इतनी लाज करती है कि मुख ही नहीं खोलती,परंतु दूसरे के प्रिय से खुलकर बोलती है। उद्दाम रस से उच्छल नायिका दूसरी ओर से उत्तर देती है-अरे अपना बलमवा से हरी हरी चुरियां हो,हरी हरी चुरियां,अरे आनक बलम भरि भरि कंगना भरि भरि कंगना,पियरी सोहै। अरे अपने बालम से तो मुझे हरी-हरी चूड़ियां ही मिलती है,परंतु आनक-बलम तो मुझे भर बांह कंगन पहना जाता है। होली पर्व है, होली उत्सव है। जीवन में मांगलिकभाव की नई चेतना लेकर एक क्रम के बाद दूसरा क्रम आता है,इसलिए ये त्योहार पर्व कहे जाते हैं। पर्व जिंदगी की एकरसता और अकेलेपन का अतिक्रम करता है। पर्व में सभी सम्मिलित होते हैं। मूल रूप से पर्व बांस या ईख की गांठ का नाम है। संधिस्थान भी पर्व कहलाता है,उंगली में जिसे पोरुआ (पर्व का अपभ्रंश) कहते हैं। संधिस्थान के विभाजन से महाभारत में भी अठारह पर्व हैं। गुजराती की कहावत है -बारो मासे तेरो पर्व पार्वण। पर्व आमोद प्रमोद है, पर्व उत्सव नृत्य गीत है, पर्व के साथ विश्वास जुड़े हुए हैं। हां, यह सच है कि जिस दिन से ब्रज में फागुन आया है,उस दिन से गांव के गांव पागल हो गए हैं। बौरा गए हैं। कैसे कहूं कि यह टेसू के फूलों का उत्पात है या आम पर आए बौरों की शैतानी है। यह भ्रमरों की गुंजार का नशा है या फागुन की बयार का? ब्रज के वे लोग टोल के टोल नाचते हैं ,गाते हैं,झांझ-मजीरा बजाते हैं,गुलाल के बादल उड़ाते हैं और केसरिया रंग बरसा देते हैं। कोलाहल करते हैं, हंसते हैं और हंसते ही चले जाते हैं। ब्रज में आज कोई श्रोता नहीं है,सभी तो गबैया बन गए हैं। कोई दर्शक नहीं है,सभी तो दृश्य बन गए हैं-सब नाचहिं गावहिं सबै,सबै उड़ावत छार। सठ पंडित बेस्या बधू सबै भये इकसार। अहो हरि होरी है। होली यौवन के उन्माद का त्योहार है।

रसिया

फाग, धमार, कबीर, चैता, चहक, तान और चांचर की तरह न जाने कितने गीत,राग और छंद होली के हैं। इनमें एक ब्रज का रसिया भी है। यों तो रसिया रस और रसिक शब्द का ही विस्तार है। रसिया,ब्रज लोक संगीत की एक परंपरा ही है। यों इसका एक रूप फूलडोल की गायकी में भी है ,जिसे रसियाई कहा जाता है। रसियाई और रसिया में अंतर है। यहां अपने मित्रों को ब्रज के रसिया के उद्दाम भाववैभव से ही परिचित कराना चाहता हूं। यह लोकमन है और आप जानते हैं कि लोकमन किसी का दबाव-प्रभाव स्वीकार नहीं करता। रसिया लोक का अपना गीत है, किसी दूसरे को सुनाने की उसे जरूरत ही क्या है? लेकिन जिसको सुनना ही हो उसे तो ढप बजाने वालों की भीड़ में सौ-सौ धक्के खाने ही पड़ेंगे। अब रसिया की कुछ पंक्तियां गुगुनाने के लिए आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं- मनुआं बड़ौ गरीब गुजरिया लै गई बातन में रूप सिखर गोरी चढ़ी ,रवि ते तेज अनूप।/ नैन बटोही थकि रहे ,लखि बदरौटी धूप।

छिपे पलकन के पातन में। मनुआं बड़ौ गरीब गुजरिया लै गई बातन में !

एक दूसरे रसिया की पंक्तियां हैं-

मन में घर करि गई गुजरिया गुन गरबीली सी ऐसी पैनी धार की काजर रेख लगाय / आंजत अंगुरी न चिरी कट्यौ करेजा जाए। न निकरै नोंक नुकीली सी। संस्कृति शास्त्रियों के सामने एक सवाल है कि होली के पर्व ने कितने गीतों को जन्म दिया? कितनी गायनशैलियां सामने आईं,कितने राग और ताल बने? कितने नृत्यों का विकास हुआ? कितनी कथा-कहानियां बनी? कितनी ललित कलाओं का विकास हुआ? यह सब कौन सी शक्ति से हुआ? यह शक्ति समष्टि की शक्ति है।

गालियां

गालियां होली दहन के बाद उन्माद जैसे रंग में अररर अररर कह कर गाली गाई जाती हैं। सूरदास ने अपने होली पदों में गालियों का बार-बार उल्लेख किया है-केकी कोक कपोत और खग करत कुलाहल भारी, मानहु लै लै नाऊ परसपर देत दिबावत गारी। झूमि झूमि झूमक सब गावत बोलत मधुरी बानी। देत परसपर गारि मुदित मन तरुनी बाल सयानी। अथवा छांडि सकुच सब देत परसपर अपनी भाई गारि!

ग्वारि मदमाती हो। लोकगीतों में भी नैनन में मोय गारी दई का उल्लेख है। रसखान तो कहते हैं कि कहि रसखान एक गारी पै सौ आदर बलिहारी। एक विचित्र लोक विश्वास के अनुसार अश्लील और पशुवृत्ति से संबंधित गालियां सुनाने से 'ढुंढा राक्षसी' नष्ट हो जाती है। पता नहीं लोक विश्वास का यह सूत्र इतिहास के गर्भ में समाई किसी प्राचीन आदिम संस्कृति का अवशेष है अथवा आदिम वासनाओं के विरेचन का माध्यम है।

कुमाऊंनी होली में लोक जीवन की झलक

प्रयाग पांडे
वरिष्ठ पत्रकार, नैनीताल

हिमालय की गोद में बसा कुमाऊं अंचल न केवल अपने नैसर्गिक सौंदर्य के अलावा सुदीर्घ और समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के लिए भी विख्यात है, बल्कि यहां मनाए जाने वाले अनेक लोक उत्सवों की तरह कुमाऊंनी होली का भी निराला अंदाज है। यहां की होली का अपना रंग है। अपनी विशिष्ट पहचान है। कुमाऊंनी होली तन को ही नहीं रंगती, मन को भी उमंग से लबालब भर देती है। कुमाऊं की होली में आंचलिक विशिष्टता है। अनूठा सौंदर्य बोध है। यहां की होली में रंग, राग और रागनियों का अद्भुत समागम है।

ऋतुराज वसंत को यौवन का सूचक माना जाता है। वसंत ऋतु के आते ही समूची प्रकृति का यौवन एकाएक खिल उठता है। प्रकृति रंग-बिरंगी हो जाती है। विशिष्ट सुगंध और रंग लिए फूल खिलने लगते हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में लोग अपने-अपने अंदाज में वसंतोत्सव के रंग के आगोश में डूब जाते हैं। भारत के कोने-कोने में राग-रंग के उत्सव होली की धूम मच जाती है। कुमाऊं की होली में प्रत्येक कालखंड के सामाजिक इतिहास, परंपरा, धर्म और संस्कृति के गहरे रंग दिखाई देते हैं। कुमाऊं की होली के गीतों में यथार्थ और कल्पना का अनोखा मिश्रण है। यहां के होली गीतों में भक्ति, रस, कला, माधुर्य, आमोद-प्रमोद और हंसी-ठिठोली का अद्भुत समावेश है। देवताओं से जुड़े ज्यादातर होली गीतों की विषय वस्तु पौराणिक आख्यान से जुड़ी है। रामायण और महाभारत के अनेक प्रसंग भी होली गीतों की विषय वस्तु बने हैं। गणेश, शिव, पार्वती की प्रार्थना, राधा-कृष्ण और राम-सीता द्वारा खेले जाने वाले रंग का वर्णन है। परदेस गए पति की प्रतीक्षा करती नवयौवना की भावनाएं हैं।

कुमाऊंनी होली में ब्रज और उर्दू का गहरा प्रभाव है। विशुद्ध स्थानीय भाषा-बोली में होली के गीत बहुत कम हैं। बावजूद इसके यहां की होली के गीतों में आंचलिक और सांस्कृतिक विशिष्टता साफ झलकती है। देश के दूसरे हिस्सों की प्रचलित होलियों से मिलती-जुलती होने के बाद भी कुमाऊंनी होली कई मायनों में अलहदा है। भारत के दूसरे हिस्सों में होली राग-रंग और उल्लास का पर्व है। पर कुमाऊंनी होली में राग-रंग, उल्लास के साथ गीत, संगीत और नृत्य पक्ष भी जुड़ा है। होली के पदों की सामूहिक अभिव्यक्ति, नृत्य और संगीत कुमाऊं की होली को देश के दूसरे हिस्से की होलियों से अलग करती है। कुमाऊं में होली के तीन रूप प्रचलित हैं। बैठकी होली, खड़ी होली और महिलाओं की होली। यहां पूस के महीने के पहले इतवार से बैठकी होली शुरू हो जाती है। कुमाऊंनी बैठकी होली में ताल और रागों का गहरा ताल्लुक है। बैठकी होली में पूस के पहले रविवार से वसंत पंचमी तक भक्ति परख होलियां गाई जाती हैं। इन्हें 'निर्वाण' की होली कहा जाता है। निर्वाण की होली गायन की शुरुआत आमतौर पर मंदिरों के प्रांगण से होती है। सबसे पहले गणेश जी की स्तुति होती है- 'तुम सिद्धि करो महाराज होली के दिन में। सिद्धि के दाता, बिघन बिनासन, हमरी राखो लाज, होलिन के दिनन में।' इसके बाद शिव, राम, कृष्ण और दूसरे देवी-देवताओं की स्तुति की जाती है। होली के गीतों में देवताओं की दार्शनिकता और रहस्यात्मकता का वर्णन अधिक होता है। निर्वाण की होलियों में आध्यात्मिकता और धार्मिक भावों की प्रधानता होती है। कुमाऊं की होली में राग-रंग के साथ इस अंचल के धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन के विविध पक्ष जीवंत रूप से जुड़े हैं। हिमालय और पर्यावरण यहां के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक का अभिन्न अंग है। दूसरे लोक उत्सवों की ही तरह कुमाऊं होली भी युगीन चेतना और सामाजिक सरोकारों से अभिन्न रूप से जुड़ी है। कुमाऊंनी होली के गीत समकालीन धार्मिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का भी बखूबी चित्रण करते हैं। इन गीतों में विशिष्ट भौगोलिक और प्राकृतिक विशेषताएं भी दिखाई देती हैं। इसे कवि चारु चंद्र पांडे की रचना के इस अंश से बखूबी महसूस किया जा सकता है-'बुरुशी का फूलों को कुम कुम मारो, डाना काना छाजि गै बसंती नारंगी। पारवती ज्यूकि झिलमिलि चादर, ह्यूं कि परिन लै रंगे सतरंगी। लाल भई छ हिमांचल रेखा, शिव जी की शोभा पिंगलि दनिकारी।' इस मधुर-मोहिल गीत-संगीत, नृत्य वाली कुमाऊं की इस निराली होली में यहां की मिट्टी की सौंधी सुगंध है। होली के जरिए कुमाऊं के समृद्ध लोक जीवन की झलक देखी जा सकती है।

बैठकी होली

कुमाऊंनी बैठकी होली का भी अपना अनूठा अंदाज है। यह शास्त्रीय आधार के रागों को गाने की एक पारंपरिक शैली है। बैठकी होली में हारमोनियम, तबला, ढोलकी, मजीरा और दूसरे वाद्य यंत्रों का इस्तेमाल होता है। इस होली की खासियत यह है कि इसमें शास्त्रीय गायन की अनुशासनात्मकता होती है। बैठकी होली में कुछ विशिष्ट और रसिक लोग ही हिस्सा लेते हैं। राग-रागनियों पर आधारित होने बावजूद बैठकी होली का अंदाज प्रकारांतर में सामूहिक गायन जैसा ही होता है। बैठकी होली में राग की शुद्धता से ज्यादा भावाभिव्यक्ति और जन-रंजनता को वरीयता दी जाती है। खास बात यह है कि बैठकी होलियों को गाने वाले ज्यादातर लोग शास्त्रीय संगीत के जानकार नहीं होते हैं।

शास्त्रीय संगीत की बुनियादी जानकारी नहीं रखने वाले लोग भी राग-रागनियों पर आधारित होली गाते हैं। होली गायन की यह शैली श्रवण परंपरा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती आ रही है। भारत के दूसरे क्षेत्रों की बनिस्बत कुमाऊं की होली का रंग कुछ अनोखा है। यहां होली महज एक दिन का पर्व नहीं, बल्कि महीनों चलने वाला सांस्कृतिक लोक उत्सव है। पहाड़ के कई इलाकों में पूस के पहले इतवार से रामनवमी तक होली की बैठकें जमती हैं। कुमाऊं की होली के मायने हुड़दंग नहीं है,बल्कि राग-रागनियों की सामूहिक अभिव्यक्ति है। परालौकिक विश्वास है। यहां की होली में स्थानीय परंपराओं, मान्यताओं और मिथकों का समावेश है। सरलता,उन्मुक्तता और आत्मीयता है। रंगों के द्वारा अपनी सांस्कृतिक जड़ों से रिश्ता कायम रखने की कोशिश है। लोक मानस में निहित आस्था की अभिव्यक्ति है।

व्यंग्य

नियुक्ति पत्र एक... नसीहतें अनेक

प्रदीप मिश्र
वरिष्ठ पत्रकार, मेरठ

गणमान्यों के बीच उच्चपदस्थ प्रतिमूर्तियों से नियुक्ति पत्र प्राप्त कर आत्ममुग्ध कुमार अपने संपूर्ण जीवन का पथ प्रशस्त होने के प्रति आश्वस्त हो गए। प्रार्थना पत्र देते-देते और प्रशस्ति पत्र दिखाते-दिखाते उन्हें ओवरएज होने की बाउंड्रीलाइन से बाहर निकलने से पूर्व नियुक्ति पत्र देखने का अनिवर्चनीय सुख प्राप्त हुआ। उन्होंने इसे 'किरपा' मानकर स्वीकारा और कर्तव्य निर्वहन के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा समर्पण का संकल्प लिया। प्रतिष्ठा का पर्याय और परिवार के पोषण के लिए सरकारी नौकरी की मनोवांछित इच्छा फलीभूत करने के लिए चप्पलें चटकाते और जूते घिसते हुए उन्हें संस्कार, स्वदेश और स्वतंत्रता के सभी संदर्भ कंठस्थ हो गए थे। इसके अलावा जब उन्हें नियुक्ति पत्र दिया गया तो ईमानदारी, पारदर्शिता, निष्पक्षता, समयबद्धता और गुणवत्ता से काम करने की नसीहत दी गई। आह्वान किया गया कि वह इन्हें आत्मसात कर अपने जीवनदर्शन का हिस्सा बना लें।

उच्चस्तरीय प्रेरणा से परिपूर्ण और प्रोत्साहित होकर वह फूले नहीं समाए। अचनाक उन्हें लगने लगा कि अकेला चना भाड़ फोड़ सकता है। इसी तरह की अनेकालेक उम्मीदों से लैस होकर आत्ममुग्ध कुमार अगले दिन कार्यस्थल पहुंचे। भव्य स्वागत हुआ। दरअसल, वह पहले व्यक्ति थे, जिन्हें भव्य समारोह में नियुक्ति पत्र मिला था। पहले के ज्यादातर लोगों को पोस्टमैन ने मुंह मीठा करने के बाद नियुक्ति पत्र दिए थे। कुछ दिन उन्हें समझ नहीं आया कि हृदय की गहराइयों से सुनी गई हिदायतों पर अमल कैसे करें। वह कर्तव्यनिष्ठा का संकल्प ले चुके थे पर यहां तो व्यक्तियों की प्रतिष्ठा सर्वोपरि थी। वह तनाव में आ गए। इसी दौर में एक दिन बड़े साहब ने बुलाया। शायद उन्होंने आत्ममुग्ध के मनोभाव, अभाव, प्रभाव और दबाव पढ़ लिए थे। हालांकि साहब को एक्सटेशन नहीं मिलने की टेंशन थी। फिर भी प्रसन्न होकर बोले-तुम में विलक्षण लक्षण देखे हैं। तुम्हारी जय-विजय होती रहे, इसके लिए सीख दे रहा हूं। और फिर भविष्य में तुम्हें मेरी सीट पर भी तो बैठना है।

दिल-दिमाग से समझाते हुए कहा कि मैं अधिकारी हूं। जान लो। अधिकारी वही होता है, जो आधा काम करे लेकिन दम के साथ दावा पूरे पर करे। कर्मचारियों के लिए काम के अलावा कोई चारा नहीं होता है। हां, यहां भाईचारा चलता है पर सब इसके हकदार नहीं होते। यह उत्तराधिकार और विशेषाधिकार पाने के लिए शर्तें तय हैं। जैसे-सोते-जागते बॉस कहो, हमेशा दास जैसे रहो, कितने भी कष्ट सहो, साथियो से कभी न कहो। सर से भी संबोधित कर सकते हो। बस, भाई साहब

कहने की जुर्रत कभी नहीं करना। यहां लोग रिश्ता नहीं बनाते, क्योंकि वे इन्हें रिसते और घिसते हुए देखते रहते हैं। वह बताते जा रहे थे। अनुभव सुनाते जा रहे थे। कहा-तुम सरकार नहीं हो, जो पांच साल के लिए होती है। नौकरी की रक्षा और मानसिक शांति के लिए जरूरी है कि थोड़ा-थोड़ा सभी को सताते रहो। धीरे-धीरे माल कमाते रहो। खुद को ईमानदार बताते रहो।

उनके ज्ञान की धारा अविरल थी। बोले- नाम के अनुरूप आत्ममुग्धता से बाहर निकलो। समझो कि रामधनी या धनीराम नाम होने से कोई धनवान नहीं होता। अब दाम और काम के बाद नाम का नंबर आता है। जब मैंने ज्वाइन किया था तो कद्दावर शख्सियत ने बताया था कि उन्नति के लिए जरूरी है कि अतीत भूलकर लगातार बढ़ते रहो। कम उपलब्धियां भी लगातार पढ़ते रहो। तर्क करोगे और सामने खड़े रहोगे तो पक्का जानो कि जहां हो, वहीं पड़े रहोगे। उन्होंने ही नसीहत दी थी कि पहले खुद आर्थिक रूप से सशक्त बनो। इसके बाद हमारे भक्त बनो। आत्मनिर्भरता इसी तरह आती है। ऐसा न करने वालों से शरमाती है।

वचन सुनकर भलीभांति भावविह्वल आत्ममुग्ध कुमार को अचानक लगातार बढ़ रही महंगाई याद आने लगी है। अलग-अलग तरह के उपाय सुझाने लगी है। वह ऐसा अंतर्यामी खोज रहे हैं, जो सामने न आए बगैर ही उन्हें अपनी दुविधा दूर करने और सुविधा के साम्राज्य में समन्वय स्थापित करने की विधा बता कर संकटों का समाधान करने के साथ जीवन सुखद, सफल और सपने साकार करने की आकाशवाणी कर दे।

कविता

जानते हो...!

वो मेरी बांसुरी की सुंदर
मनभावन तान अब खामोश है
मौन धारण कर लिया है उसने
रूठ गई है मुझसे
वो माउथ ऑर्गन, वो हारमोनियम
भी मुंह फुलाए बैठे हैं
मूक हो गए हैं,
एक शब्द भी नहीं बोलते
तुम्हारी तरह नाराज हैं मुझसे

जो अकेले में मेरे साथ बैठ
दुख सुख की बतियाती थी
मेरे अवसाद को भुलाती थी
अब बात नहीं करती है मुझसे
सब कुछ कहीं छूट गया है
पीछे बहुत पीछे
शायद वहीं जहां
तुम अलग हुए थे मुझसे!

वो नयनाभिराम चित्र
उकेरने वाली मेरी तूलिका
अब कोई रंग नहीं पहचानती
केनवास से अनबन हो जैसे
ये भी विमुख हो गई है मुझसे
वो जानवरों, पक्षियों की बोलियां,
वो फिल्मी कलाकारों की नकल
वो हंसी मजाक, वो ठट्ठा,
वो बे सिर पैर की बातें
अब कुछ भी नहीं हो पाता है
मुझसे
और वो जो कविता थी न

उमाकांत दीक्षित
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

गीत

आओ इस मजबूरी को भी,
समझें हम।
दिन दूनी बढ़ती दूरी को,
समझें हम।

चार दिवारों तक सीमित,
यह जीवन है।
नोन-तेल में सुबह शाम
उलझा मन है।
होरी की ये कथा अधूरी,
समझें हम।

हंसने पर समझा सबने,
वह खुश होगा।
जान रहा है मन उसका,
कितना दुख भोगा।
मन को छूकर आज व्यथा को,
समझें हम।

सब अपने-अपने कोणों,
से सोच रहे।
शब्दों के नाखूनों से
हैं नोच रहे।
इस चुप्पी को क्या मगरूरी
समझें हम।

पंकज मिश्र 'अटल'
आसाम

संघर्ष एक मां का

मां से ही सुबह, मां से ही दिन
मां से रात भी दिन लगता है,
मां के साये से घर का, हर
कोना भरा सा लगता है
मां की एक मुस्कान से,ये जग भी
मुस्कुराता लगता है,

मां है तो,मां से ही,हर पल सुहाना
लगता है,
धूप-छांव,बारिश में, मां का चेहरा
खिलता दिखता है,

मां मेरी हो या तेरी हो, मां तो
आखिर मां होती है,
लेकिन उस मां की जब बात करूं
,वो मां सबसे न्यारी होती है,
जो मां भूख-प्यास से व्याकुल
होकर,
हाड़ कंपातीं ठंड को सहकर,
चिलचलाती धूप में जलकर,
सारे सुखों से नाता तोड़कर,
सारे दुखों को झेल-झेलकर,
गाय-भैंस को पाल पोस कर,
बच्चों को तालीम देती है,

कोसो खुद नंगे पैरों चलकर,
बच्चों को चप्पल देती है,
खुद एक कपड़े में जिस्म को
ढककर,
बच्चों के तन को ढकती है,
बच्चे हमेशा स्वस्थ्य रहे
मां ऐसा वो प्रण लेती है,

वो दिन भी आता है, जब बेटा
अफ़सर बनता है,
उस अफसर का अफसर भी,
देख,सकते में पड़ जाता है,

सोचता है कि देखता हूं, ये आगे
कैसे बढ़ता है,

रोक दूंगा रास्ते इसके सारे,
कर दूंगा मैं इसको पैदल,
इसी सोच और मानसिकता से,
हो गया था जैसे वो पागल,

भ्रम में था वह, उस मां के लाल
की जीवटता के संघर्ष से,
जो पला-बढ़ा था लोहालाट सी
मां के संघर्ष की छांव से,

जिसने सिखाया, मजहब नहीं
सिखाता आपस में बैर रखना,
मां की ऐसी सीख से, वह आगे
बढ़ता जा रहा,
बस उसी बात से, उसके लाल
का अफसर घबराता जा रहा,

अनजान था वो,ऐसी मां के
फौलादी बच्चे,देश का मान
बढ़ाते है,
मां के कष्टों को भी,देश का कष्ट
समझते है,
आंच न आए अपने देश पर,ऐसा
प्रण वे लेते हैं,
मां हर घर में स्वस्थ रहे,ऐसा
अभियान चलाते हैं,

मुझ से रब,गर पूछे तो,ऐसी मां
हर बार मिले,
स्कूली शिक्षा से पहले जिनसे,
जीवन का आधार मिले,

मां ही दुनियां,मां ही जीवन,मां से
ही जग चलता है,
ऐसी मां को शीश झुकाकर,घर
ही मंदिर लगता है।
घर ही मंदिर लगता है,
घर ही मंदिर लगता है।

डा. बी.पी.सिंह
भाकृअनुप

कहानी

बाघ और वधू

जब वह लखीमपुर-खीरी के धरमपुर गांव से नव वधू के रूप में बीस किलोमीटर दूर स्थित बनकटी गांव में आई थीं तो उनका नाम चमेली देवी था। चमेली देवी के पिता मध्यम जोत के किसान थे। यह चमेली देवी का दुर्भाग्य ही था कि जब वह चौदह वर्ष की हुई और उनके पिता चौधरी राम सुख ने उनके लिए वर की खोज प्रारंभ की,उस साल पूरे सावन और भादौ सूर्य देवता आसमान में पूरे ताव-तेवर के साथ तपते रहे जिसके परिणामस्वरूप मेड़ों पर उगने वाली दूब भी अपनी हरियाली नहीं बचा सकी,धान की फसल को क्या कहा जाए। यही दशा गेहूं जैसी रबी की फसलों की भी हुई। धनाभाव के कारण चौधरी राम सुख वर देखाई ही करते रहे,कहीं किसी के समक्ष कन्या के विवाह का प्रस्ताव नहीं रख सके। अगले वर्ष भी वर्षा का पहले जैसा ही हाल रहा और चौधरी राम सुख धनाभाव के कारण अपनी बेटी का विवाह कहीं तय नहीं कर सके। तीसरे वर्ष ऐसी वर्षा हुई कि जलवृष्टि का बरसों पुराना रिकार्ड ही ध्वस्त हो गया। बाढ़ का पानी फसलें तो फसलें,किसानों की झोपड़ियां तक बहा ले गया। किसान लोग उदास आंखों से आसमान ही ताकते रह गए। इस तीन वर्ष की दैवीय विपत्ति ने अन्य किसानों की भांति ही चौधरी सुख राम की भी कमर तोड़ दी।

डॉ. मृदुल शर्मा
लखनऊ

सत्रह वर्ष की कुंवारी कन्या चौधरी राम सुख की छाती का असहाय बोझ बन गई और परिस्थितियों से निराश होकर उन्होंने अपनी बेटी का विवाह बनकटी निवासी अपने ही एक गरीब रिश्तेदार दीनदयाल के बेटे शिव दयाल से तय कर दिया। चौधरी की पत्नी ने वर पक्ष की गरीबी को देखते हुए जब असंतोष व्यक्त किया और सलाह दी कि कुछ खेत बेचकर बेटी का विवाह किसी खाते-पीते परिवार में करो तो चौधरी बिगड़ कर बोले-"खेती बाप-दादाओं की संपत्ति है,इस पर कुल के उत्तराधिकारियों का हक है। हम इसे बेटियों के विवाह हेतु नहीं बेच सकते। रही बात अमीरी-गरीबी की,तो लक्ष्मी तो चंचला हैं। बेटी के भाग्य में सुख लिखा होगा तो जहां जाएगी, पीछे-पीछे लक्ष्मी जी भी वहां पहुंच जाएंगी।" उनकी बात सुनकर चमेली देवी की मां चुप हो गई और चमेली देवी ने चुपचाप शिव दयाल के साथ फेरे ले लिए। शिव दयाल के पास कुल दो बीघा खेत था और बूढ़े मां-बाप। वह आलसी प्रवृत्ति का नौजवान था और रूखी सूखी खाकर भी संतुष्ट रहता था,मगर चमेली देवी को यह स्थिति स्वीकार नहीं थी। वह शिव दयाल के साथ खुद भी खेत में जाकर मेहनत करती और अपने पति से भी डट कर मेहनत कराती। पत्नी से परेशान पति ने खीझ कर चमेली देवी का नया नाम चामुंडा देवी रख दिया।

गेहूं की फसल पक जाने पर एक दिन शिव दयाल और चमेली देवी गेहूं काटने गए। चमेली देवी ने अपने दस माह के पुत्र को मेड़ पर लिटा दिया और पति के साथ गेहूं काटने लगी। अचानक चिड़ियों की चीखें सुन कर उसने आसपास निगाह दौड़ाई। बच्चे से पांच-सात मीटर की दूरी पर बाघ देखकर उसके होश उड़ गए। वह चीखते हुए बच्चे की ओर भागी। यह देख शिव दयाल भी लाठी उठाने के लिए लपका। मगर जब तक वह लाठी लेकर बाघ तक पहुंचता तब तक बाघ ने बच्चे को और चमेली देवी ने बाघ को दबोच लिया था। चमेली देवी ने हंसिया के एक ही वार में बाघ की आंतें बाहर खींच लीं और बाघ के मुंह से अपने बच्चे को छुड़ा कर भागी। तब तक आसपास के खेतों से दौड़ कर अन्य लोग भी पहुंच गए। वे सबके सब चमेली देवी के साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। उनके समक्ष शिव दयाल ने अपनी पत्नी की पीठ ठोंकते हुए गर्व से कहा- "बाघ को देर से समझ आया होगा कि आज उसका सामना बनकटी की चामुंडा देवी से पड़ा है।... बेचारा बाघ...।" और फिर उस दिन से चमेली देवी चामुंडा देवी हो गईं।

चामुंडा देवी ने जीवन में कभी हार नहीं मानी और हर परिस्थिति का डटकर सामना किया। उन्होंने अपने पति की मृत्यु के बाद भी अपने पुत्र राकेश को उच्च शिक्षा दिलाई और राकेश को कभी खेत में काम नहीं करने दिया। यह राकेश की मेहनत के साथ ही चामुंडा देवी की तपस्या का भी फल था कि एम.एससी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर वह विधान सभा सचिवालय में समीक्षा अधिकारी के पद पर नियुक्त हो गया।

राकेश की नौकरी लगते ही उसके विवाह हेतु रिश्ते आने लगे। चामुंडा देवी ने राकेश से उसकी पसंद के विषय में पूछा तो वह शर्माते हुए बोला-"अम्मा, ऋतु मेरे साथ विश्वविद्यालय में पढ़ती थी। शहर में उसके पिता बहुत बड़े वकील हैं। हम दोनों एक-दूसरे को अपना जीवनसाथी बनाना चाहते हैं।" "कौन बिरादरी के हैं?" " स्वजातीय ही हैं अम्मा। अगर तुम आज्ञा दो तो मैं ऋतु से कहूं कि वह अपने पिता को तुमसे बात करने के लिए कहे।" "अब जब तुमने खिचड़ी पका ही ली है,फिर मुझसे क्या पूछते हो? बुलाओ वकील साहब को।" यह सुनकर राकेश खुशी से झूम उठा और अपनी मां को गोद में उठाकर आंगन के कई चक्कर लगा डाले। चामुंडा देवी ने बेटे की खुशी के लिए ऋतु से उसका विवाह कर दिया,किंतु शहर में पली-बढ़ी अमीर बाप की इकलौती बेटी चामुंडा देवी के कड़क स्वभाव को साल भर भी सहन न कर सकी। राकेश ने मां और पत्नी के बीच सामंजस्य स्थापित करने के बहुत प्रयास किए,किंतु उसे सफलता नहीं मिली और विवश होकर वह ऋतु को शहर में अपने साथ रखने हेतु राजी हो गया। चामुंडा देवी ने अपने एकांत को कम करने हेतु गांव बालों से अपना संबंध बढ़ा लिया और धीरे-धीरे चामुंडा काकी के रूप में बनकटी में लोकप्रिय हो गईं। गांव वालों के आग्रह पर उन्होंने ग्राम प्रधान का चुनाव लड़ा और उसमें जीत हासिल की।

अब वह पूरी तरह से गांव वालों की भलाई हेतु समर्पित हो गईं। धीरे-धीरे राकेश का बनकटी आना बहुत कम हो गया तो चामुंडा काकी ने भी बेटे से संपर्क बनाए रखने का कोई प्रयास नहीं किया। एक दिन लखीमपुर-खीरी की महिला जिलाधीश ने खंड विकास अधिकारियों की मीटिंग में जब बनकटी ग्रामसभा की प्रगति और ग्राम प्रधान चमेली देवी की प्रशंसा सुनी तो बनकटी ग्राम सभा में नारी सशक्तिकरण का सेमिनार आयोजित करने का आदेश दे दिया।

सेमिनार के दिन आसपास के गांवों की महिलाओं को एकत्र कर उनके समक्ष महिलाओं हेतु सरकारी योजनाओं और उनके अधिकारों की चर्चा हुई। सेमिनार की समाप्ति पर वह चमेली देवी उर्फ चामुंडा देवी से मिलीं और उनके आग्रह पर उनके घर चाय पीने आईं। वहां उपस्थित गांव वालों ने उन्हें बताया कि चामुंडा काकी अपनी जान पर खेलकर बाघ के मुंह से अपना पुत्र निकाल लाई थीं। यह सुनकर कर जिलाधिकारी महोदया आश्चर्य चकित रह गईं। उन्होंने पूछा- "क्या करता है आपका बेटा?" "विधानसभा सचिवालय में समीक्षा अधिकारी है।" चामुंडा काकी ने बताया। आप यहां अकेले रहती हैं? "हां, बेटे को बाघ से बचा लाई मगर बड़ा होने पर उसे बहू उड़ा ले गई।" -चामुंडा काकी ने खिसियानी हंसी हंसते हुए कहा। "बहू ठीक नहीं मिली?" "ऐसा नहीं है। बेटा उसके साथ खुश हैं और जीवनसाथी होने के नाते बेटे पर उसका अधिकार भी है।" "अधिकार तो मां का भी है,जो जान जोखिम में डालकर पुत्र को जन्म देती है और आप तो अपनी जान जोखिम में डालकर उसके लिए बाघ से भिड़ गईं। उसका पालन-पोषण किया, पढ़ाया -लिखाया, तो आपका उस पर कोई अधिकार नहीं है?" इतना सुनते ही चामुंडा काकी अपने को रोक न सकीं और फफक कर रो पड़ीं। यह देख वहां उपस्थित अधिकांश लोगों की आंखें भर आईं।

समीक्षा

औपनिवेशिक भारत की महत्वपूर्ण शख्सियत

राजगोपाल सिंह वर्मा जी ने यूं तो कई विधाओं में लेखन किया है,किंतु वे एक ऐसे लेखक हैं जिनको ऐतिहासिक तथ्यों को खोज-खोज कर उनको उनकी सही अवस्था में लाने में आनंद आता है। चाहे,बेगम समरू हों या दुर्गावती : गढ़ा की पराक्रमी रानी या औपनिवेशिक काल की जुनूनी महिलाएं या फिर जार्ज थॉमसः हांसी का राजा आदि। इस बार उन्होनें गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर की बड़ी बहन स्वर्णकुमारी देवी पर अपनी कलम चलाई है। जिन्होंने हर विधा में अपनी छाप छोड़ी। चाहे उपन्यास हो,कहानी, कविता,नाटक,विज्ञान,गणित जैसे विषयों पर शोधपरक लेख हों,यात्रा वृतांत हों, अनुवाद हों,व्यंग्य हों या बाल कहानियां हों। स्वर्णकुमारी पहली महिला संपादक थीं, जिन्होंने "भारती" नामक पत्रिका का संपादन निरंतर 18 वर्षों तक किया।

महिलाओं की बेहतरी के लिए उनकी प्रतिबद्धता ही थी जो उन्होनें "सखी समिति" नामक संस्था का गठन किया था जिसका उद्देश्य जरूरतमंद विधवा और अविवाहित महिलाओं की शिक्षा के साथ उन्हें उचित और सम्मानजनक रोजगार दिलाना भी था। एक कुशल संपादक के साथ-साथ वे समाजसेविका भी थीं,जो जीवनपर्यंत साहित्यिक और सामाजिक प्रतिबद्धताओं के प्रति समर्पित रहीं। इसका पूरा विवरण उनकी जीवनी में है। उदाहरण देखें -'इस प्रकार स्वर्णकुमारी के जीवन के 18 मुख्य वर्ष - 1884 से 1898 तक "भारती" के संपादन में बीते। "भारती" तत्कालीन भारतीय समाज और विशेष रूप से बंगाल की पढ़ी-लिखी जनता के उस वर्ग के लिए एक ब्रांड के रूप में उभरकर आई थी।' इसी उपन्यास से,(पृष्ठ 69) औपनिवेशिक भारत की एक सुविख्यात लेखिका और एक महत्वपूर्ण शख्सियत को ऐसे भुला दिया गया जैसे उनका साहित्यिक या सामाजिक सांस्कृतिक स्तर पर कोई वजूद ही न था। खैर ये आवरण हटेंगे,जब-जब राजगोपाल सिंह वर्मा जैसे लेखक अपने लेखन के दायरे में उनको रखेंगे,ये आवरण जरूर हटेंगे।

राजगोपाल सिंह वर्मा जी ने जिस मनोयोग से छोटे-छोटे सूत्र इकट्ठा कर इस जीवनी को सबके सामने प्रस्तुत किया है,वह अपने आप में एक सराहनीय कार्य है। जीवनी की सुंदर,सहज,सरल भाषा है। कोई अतिरिक्त बनावट या बुनावट नहीं। तथ्यों के साथ न कोई जमाव न घटाव किया गया है। इसलिए एक सही व्यक्तित्व को उसके कार्यों व, समाज में उसके योगदान को पाठकों के समक्ष रख दिया है उन्होंने। ताकि पाठक अपने विवेक की कसौटी पर उसको परख सकें।

पुस्तक- स्वर्णा : टैगोर की अल्पचर्चित विदुषी बहन की जीवनी
लेखक : राजगोपाल सिंह वर्मा
प्रकाशक : पेंगुईन स्वदेश
पृष्ठ : 178
मूल्य : रु 299
संस्करण : 2023
समीक्षक : पूनम मनु, मेरठ।

लघुकथा

ताली और गाली

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'
कर अधिकारी, बलरामपुर

"इस बार जो प्रत्याशी चुनाव में उतर रहे हैं, बड़े ईमानदार हैं। ये देखना! जरूर बदलाव लेकर आएंगे।" "हां भइया! आंखें तरस गईं बदलाव के लिए। अब तक तो कोई आया नहीं बदलाव लाने वाला। इन्हें भी देख लो।" "अरे! क्या बात करते हो? सुना नहीं क्या इनका भाषण? क्या गजब धोया उन्हें? ताली पे ताली जो बजी, रुकी नहीं।" "भईया! पांच साल पहले उन्होंने भी क्या गजब धोया था? शायद भूल गए आप। ताली तब भी बड़ी जोरदार बजी थी और इतनी बजी थी कि पूरा पंडाल गूंजता रहा था।" "हां! हां! सही कह रहे हो।" "हर पांच साल बाद एक को ताली और दूसरे को गाली के सिवा कुछ है हमारे हाथ में?" एक दूसरे से सहमत होते हुए दोनों अपनी-अपनी राह पर निकल लिए।

लाल गुलाब

तन्मय और पाखी एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। कुछ समय बाद जैसे तैसे घर वालों को मना कर दोनों विवाह बंधन में बंध गए। कहते हैं प्यार की दुनिया बहुत हसीन होती। छुपते छुपाते मिलना, उस थोड़े से वक्त में प्यार, मनुहार जज्बातों की बातें,मिलने से पहले बिछड़ने की कसक, सब स्वप्निल एक अलग रोमांचित कर देने वाली दुनिया। शादी के दो साल बाद जब हकीकत से रूबरू हुए तो घर-परिवार,काम की ढेरों जिम्मेदारियों के बीच कब प्यार की दुनिया नोंकझोंक बहस बाजी का मैदान बन गई पता ही नहीं चला।

एक दिन एक पार्टी में जाते समय अचानक दोनों में किसी बात को लेकर काफी बहस हो गई। तन्मय कैब बुक कर चुका था,लेकिन अब पाखी जाने को तैयार नहीं थी। कैब के ड्राइवर सूरज भान काफी देर तक इंतजार करते रहे। जब कोई नहीं आया तो उन्होंने कॉल करके बुलाया कि चलना है तो जल्दी चलो। दोनों बाहर तो आ गए, लेकिन बहस बंद नहीं हुई और तलाक की बात होने लगी। सूरज भान के काफी समझाने के बाद दोनों गाड़ी में तो बैठ गए,लेकिन लड़ाई होती रही। दोनों एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप करते रहे कि तुमने मेरे साथ ये गलत किया वो गलत किया। अब हमारा साथ रहने का कोई मतलब नहीं। सूरज भान चुपचाप सब सुनते रहे। एक फूल बेचने वाले को देख कर उन्होंने गाड़ी रोकी और दो गुलाब के फूल लिए,तन्मय और पाखी को देकर बोले तुम लोगों को अलग होना है बिल्कुल हो जाना,लेकिन मेरे कहने से जब तक गाड़ी में बैठे हो एक खेल खेल लो। पहले तो दोनों गुस्से से झल्ला पड़े फिर सूरज भान के बहुत आग्रह करने पर दोनों तैयार हो गए और बोले बताइए क्या करना है? उन्होंने कहा अभी तक आप लोग उन बातों को याद करके बहस कर रहे थे,जो गलत हुआ।

निवेदिता शुक्ला
इटावा

अब उन बातों के लिए एक दूसरे को धन्यवाद बोलो जो बात एक दूसरे की अच्छी लगी हो और ये गुलाब देकर धन्यवाद बोलो। एक दूसरे को जब उन बातों के लिए धन्यवाद बोलना शुरू किया तो धीरे-धीरे दोनों नॉर्मल होने लगे और जब गाड़ी से उतरे दोनों खुश और संतुष्ट थे। चलते समय दोनों ने वही गुलाब सूरजभान को देते हुए धन्यवाद बोला और तीनों हंस पड़े। सूरजभान बोले अगर आपका कोई भी प्रिय रिश्ता टूटने की कगार पर पहुंच गया है तो एक बार उसने क्या गलत किया की बजाय ये याद करना कि क्या अच्छा किया। ऐसे कोई भी रिश्ता कभी नहीं टूटेगा।

बतकही

दांपत्य रस

अर्द्धांगिनी के शाश्वत कटु वचन सुनकर मेरे मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ। अगले दिन संन्यास लेने का दृढ़ निश्चय करके सोया ही था कि सपने में अपने को हिमालय की गुफा में एक दिव्य पुरुष के सामने खड़ा पाया। माथे पर तेज और अधरों पर मंद मुस्कान। उन्हें देखते ही मेरे हाथ जुड़ गए। अपनी व्यथा सुनाने के बाद मैंने उनसे कहा-'संन्यास लेना चाहता हूं, प्रभु। दांपत्य की पीड़ा अब और सही नहीं जाती।' दिव्य पुरुष ने मेरे माथे पर हाथ रखकर बड़े स्नेह से कहा- 'तुम्हारी व्यथा मैं समझ सकता हूं,वत्स! मैंने स्वयं इसे झेला है। वैवाहिक जीवन वस्तुतः एक महायज्ञ है। पुरुषों के लिए ही नहीं,स्त्रियों के लिए भी। ऐसा यज्ञ जिसमें सबको अपनी स्वतंत्रता और उड़ने की अनंत इच्छाओं की आहुति देनी होती है। वैवाहिक जीवन में तुम अपने पंख अवश्य खो बैठते हो,मगर सृष्टि की प्रक्रिया तुम्हारे इस आत्मविसर्जन के बूते ही उड़ान भरती है। तुम्हारे इस आत्मबलिदान की पटकथा समाज ने पहले से लिख रखी है। तुम इस नाटक में एक अभिनेता मात्र हो। वैसे सच तो यह है कि वैवाहिक जीवन में जो नष्ट होता है,वह असत्य,अनित्य, क्षणभंगुर है। शाश्वत केवल दांपत्य का दुख है जिसे झेलने को धरा धाम पर लोग अवतरित होते हैं और होते रहेंगे। कभी स्त्री रूप में, कभी पुरुष रूप में। दांपत्य के इस शाश्वत दुख से तुम्हें बचाने कोई देवता नहीं आने वाला। वे स्वयं अपनी देवी पत्नियों के आगे आत्मसमर्पण कर चुके हैं। तुम्हारे वश में इतना भर है कि सुख और दुख,कलह और प्यार,शांति और अशांति के बीच स्थितप्रज्ञ बनो। इसमें परिश्रम बहुत है,परंतु धीरे-धीरे स्वयं को नष्ट करने की इस प्रक्रिया में रस आने लगता है। सो हे अज्ञानी पुरुष, संशय त्यागो और घर को लौट जाओ। जीवन में सुख,शांति,प्रेम और स्वतंत्रता ही सब कुछ नहीं है। इसी जीवन में तुम्हें दुख, तनाव,अशांति,आतंक,त्रासदी,दासता,अवसाद, विडंबनाओं और मूर्खताओं के बारे में भी जान लेना चाहिए।

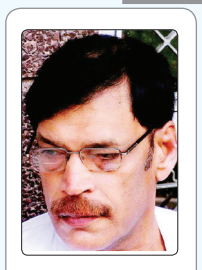

ध्रुव गुप्त
सेवानिवृत्त आईपीएस

नींद खुली तो घर में तेज स्वर में रणभेरी बज रही थी,परंतु मेरे भीतर अब भय का नामोनिशान नहीं था। मेरे ज्ञान-चक्षु खुल चुके थे कि पत्नी रूपी संकट से अब लड़ना नहीं। डरकर भागना भी नहीं। सर झुकाकर उसके आगे आत्मसमर्पण कर देने में ही सुख है।

प्राकृतिक सुंदरता से पर्यटकों को आकर्षित करता श्रीलंका

भारत के दक्षिणी सिरे के पास स्थित, श्रीलंका एक द्वीप है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता से पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है। भारत और श्रीलंका के द्विपक्षीय संबंधों का इतिहास 2500 वर्षों से भी अधिक पुराना है। जब यहां शाही सिंहला वंश का शासन था, भारतीय सम्राट अशोक के पुत्र अराहत महिंदा ने 246 ईसा पूर्व में श्रीलंका में एक बौद्ध मिशन का नेतृत्व किया था, उन्होंने श्रीलंकाई राजा देवनमपिया तिस्सा को बौद्ध धर्म में परिवर्तित कर उसे राज्य धर्म के रूप में स्थापित किया था। अशोक की बेटी, संघमित्ता भी मूल बोधि वृक्ष की शाखा यहां लाई थी, जिसे अनुराधापुरा में लगाया गया था। स्थानीय बौद्धों की आज भी इस बोधि वृक्ष की इस शाखा के प्रति अत्यंत श्रद्धा है और यह आज भी लहलहा रहा है। जबकि हिंदुस्तान के बोधगया के मूल बोधि वृक्ष को बौद्ध विरोधी शशांक ने कटवा दिया था।

श्रीलंका 1948 में ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र होने के बाद से जल्दी ही बौद्ध और तमिलों के बीच जातीय विवादों में फंस गया। पिछले दिनों बौद्ध और मुस्लिमों के बीच जातीय संघर्ष देखने को मिले। जहां भी बहुसंख्यक अपने देश के अल्पसंख्यकों के साथ प्रेम से रहना नहीं सीख पाते, वहां कभी-कभी गृह युद्ध भी होते हैं। श्रीलंका में सामाजिक समरसता का अभाव दिखता है। चेन्नई से हम फ्लाइट से कोलंबो पहुंचे। कोलंबो एयरपोर्ट के पास ही निगोन्बो के होटल कैटामरैन बीच होटल में गए। फिर हम घूमने निकले।

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि. पुलिस महानिरीक्षक

यह सही है कि भगवान राम हमारी आस्था, हमारे विश्वास के प्रतीक हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम पर फादर कामिल बुल्के ने 'रामकथा' में राम, सीता, राजा दशरथ की ऐतिहासिकता पर विस्तृत विवेचन किया है। तमाम लोग उससे असहमत होंगे। इसी तरह रावण की लंका क्या आज की श्रीलंका है? इस प्रश्न पर भी विद्वानों में मतभेद है। रामविलास शर्मा जी उसे बिहार में बताते हैं तो तमाम लोग मध्य प्रदेश के अमरकंटक से जबलपुर के आसपास तो कुछ आज के इतिहासकार उसे श्रीलंका भी बताते हैं। खैर आज पर्यटकों को प्राकृतिक रूप से सुंदर देश श्रीलंका घूमना टहलना हैं तो उन्हें भी सुखद लगता है कि हम उस लंका में आए हैं, जहां रावण को हमारे भगवान राम ने मारा था और श्रीलंका के लोगों को भी यह इसलिए सुखद लगता है कि इसी बहाने गर भारतीय पर्यटक प्रचुर संख्या में आते हैं, तो अच्छा है, उनकी आमदनी बढ़ती है और रावण का देश होना उन्हें स्वीकार है। आज यहां कई जगहों और मंदिरों को भगवान राम से जोड़कर बताते हैं। मैं व्यक्तिगत तौर पर किसी पक्ष विपक्ष में नहीं हूं, स्यादवादी हूं, पर यह जरूर चाहता हूं कि गहराई से इस संबंध में शोध हो ताकि सारे विवादों की समाप्ति हो, कहीं कोई संशय न रहे। हमारे साथ के सहयात्री भी भगवान रामचंद जी से जुड़े प्रसंगों को लेकर बहुत उत्साहित थे। गाइड से तमाम पूछ रहे थे कि रावण का महल कहां है, कहां युद्ध हुआ था, सुमेरु पर्वत कहां हैं? गाइड भी होशियार था, वैसा ही जवाब देता था, जैसा पर्यटक को पसंद आए। ताजा खुदाई से पता चला है कि श्रीलंका के शुरुआती मानव का संबंध उत्तर भारत के लोगों से था। भाषिक विश्लेषणों से पता चलता है कि सिंहली भाषा, गुजराती और सिंधी से जुड़ी है।

आज राजनैतिक रूप से श्रीलंका 25 जिलों में विभाजित है। 1972 तक इसका नाम सीलोन था, जिसे 1972 में बदलकर लंका तथा 1978 में इसके आगे सम्मानसूचक शब्द "श्री" जोड़कर श्रीलंका कर दिया गया। श्रीलंका का सबसे बड़ा नगर कोलंबो समुद्री परिवहन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण बंदरगाह है।

श्रीलंका में तमाम सिमेट्री दिखी। यहां पुर्तगाल, डच और अंग्रेजों ने लंबे समय तक शासन किया है, उनमें से ज्यादातर यहीं दफन हैं। उन्होंने ईसाई धर्म को खूब फैलाया और बुद्धिष्ट/ हिंदू मंदिरों को नुकसान पहुंचाया है।

रास्ते में चिलाव शहर मिला। यहां प्रसिद्ध आवर लेडी ऑफ माउंट कार्मेल की मूर्ति गिरजाघर में खड़ी है। बताया गया चिलाव में ही लोग सुरक्षा की देवी आवर लेडी ऑफ माउंट कार्मेल का पर्व हर जुलाई में मनाते हैं। आवर लेडी ऑफ माउंट कार्मेल के उत्सव के मौसम के दौरान, मदर मैरी को श्रद्धांजलि देने के लिए शहर को पूरी तरह से सजाया जाता है। 'भारत के राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने नवंबर 1927 में श्रीलंका की अपनी पहली और एकमात्र यात्रा पर चिलाव का दौरा किया, जब इसे सीलोन कहा जाता था। यह एक ऐतिहासिक यात्रा थी-गांधीजी को शहर में रहने वाले स्वतंत्रता सेनानियों चार्ल्स एडगर कोरिया और उनके भाई विक्टर कोरिया ने चिलाव में आमंत्रित किया था। भाइयों ने चिलाव एसोसिएशन और सीलोन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की और सीलोन की स्वतंत्रता के लिए कड़ा अभियान चलाया। कोरिया परिवार का चिलाव के साथ एक मजबूत संबंध रहा है। श्रीलंका में एक कहावत है कि चिलाव तीन 'सी' के लिए जाना जाता है - केकड़े, नारियल और कोरिया।

नेगोंबो शहर अपने आकर्षक समुद्र तटों और सदियों पुराने मछली पकड़ने के उद्योग के लिए जाना जाता है। नेगोंबो में समुद्र तट अपने आनंदमय दृश्यों के साथ स्थानीय और विदेशी दोनों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यह अपने लंबे रेतीले समुद्र तट और ताड़ के पेड़ों के लिए प्रसिद्ध है।

बताया जाता है कि अपने समुद्र तटों का आनंद लेने के लिए श्रीलंका में सबसे अच्छी जगह नेगोंबो है, जो भंडार नायके अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से सिर्फ 15 मिनट की दूरी पर स्थित है। यह श्रीलंका का "लिटिल रोम" कहा जाता है।

मुन्नेश्वरम मंदिर

चिलाव कस्बे के पास ही हम सब मुन्नेश्वरम मंदिर गए। कहा जाता है कि भगवान राम अपनी विजयी लड़ाई के बाद रावण के विमान से अयोध्या के लिए रवाना हुए। उन्होंने लगा कि ब्राह्मण दोष उनका पीछा कर रहा है, क्योंकि रावण को मार डाला था, जो एक ब्राह्मण था। उन्होंने विमान को रोक दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि इस स्थान पर "ब्राह्मण दोष" उनका पीछा नहीं कर रहा था। वह विमान से उतरे और भगवान शिव से उपाय पूछा। भगवान शिव ने भगवान राम को आशीर्वाद दिया और उन्हें दोष से छुटकारा पाने के एकमात्र उपाय के रूप में भारत में मनावरी, मुन्नेश्वरम, तिरुकेथीस्वरम और रामेश्वरम में चार लिंग स्थापित करने और प्रार्थना करने की सलाह दी। मंदिर में मनाए जाने वाले मुख्य त्योहारों में नवरात्रि और शिवरात्रि शामिल हैं। मंदिर में चार सप्ताह तक चलने वाला मुन्नेश्वरम त्योहार भी मनाया जाता है जिसमें हिंदू और बौद्ध दोनों शामिल होते हैं। गाइड ने बताया कि यह मंदिर पांच अन्य मंदिरों के साथ ईश्वर को भगवान शिव के रूप में समर्पित हैं। इन मंदिरों के नाम हैं नागुलेश्वरम मंदिर जाफना, कोनेस्वरम मंदिर त्रिंकोमाली, टोंडेस्वरम मंदिर मतारा (तेनावरम), मुन्नेश्वरम मंदिर चिलाव और केथीस्वरम मंदिर मन्नार श्रीलंका। श्रीलंका को शिव के पांच निवास स्थानों का घर माना जाता है। इसके पश्चात हम सब मनावरी ईश्वर मंदिर गए। मंदिर बंद था। गाइड ने खुलवाया। बताया जाता है, यह पहला स्थान था जहां भगवान राम ने राजा रावण से युद्ध जीतने के बाद अपनी पत्नी सीतादेवी को मुक्त कराने के बाद शिव लिंगम स्थापित किया था और प्रार्थना की थी। यह सभी हिंदुओं के लिए एक पवित्र पूजा स्थल है। अंत में हम मुरुगन अर्थात् शिव के पुत्र कार्तिकेय के मंदिर गए। कार्तिकेय यहां के सबसे लोकप्रिय तमिल/हिंदू देवताओं में से एक हैं। इनकी पूजा न केवल तमिल हिंदू करते हैं, बल्कि बौद्ध सिंहली और आदिवासी भी करते हैं। यहां कई ऐसे मंदिर हैं, जो हिन्दू और बौद्धों की साझा संस्कृति को दर्शाते हैं।

खाना खजाना

बेसन खोया चक्की और ठंडाई

होली आने वाली है और होली आते ही याद आती है सबसे पहले स्वादिष्ट मिठाइयां और ठंडाई की। आइए होली के रंगों के साथ बनाते हैं, घर पर शुद्धता और बिना केमिकल वाली प्योर 'नेचुरल ठंडाई केसरी' और बेसन खोया चक्की। आज बाजार में कई कंपनियों की ठंडाई मिलती है, उसमें आर्टिफिशियल कलर, एसेंस और प्रिजर्वेटिव भी होते हैं, जो कई महीनों पुरानी भी होती है। साथ ही बाजार जैसी शानदार, दानेदार और शुद्ध घी से बनी 'बेसन की चक्की' घर पर ही बनाए और इसके पारंपरिक स्वाद का सपरिवार आनंद लें।

प्रीतम कोठारी
फूड ब्लॉगर

सामग्री

- बेसन-300 ग्राम
- 2 कप चीनी
- 1 चुटकी केसर के रेशे
- 1/4 छोटी चम्मच इलायची पाउडर
- 1 चम्मच बारीक कटे पिस्ते
- 1 चुटकी केसरिया रंग
- 1 कप मलाई से घी बनाने के बाद बचा मावा
- 3/4 कप घी
- 1/4 छोटी चम्मच जायफल पाउडर
- 1/4 छोटी चम्मच जावित्री पाउडर

बनाने की विधि

सबसे पहले बेसन में दो चम्मच दूध और एक चम्मच घी डालकर हाथ से अच्छे से मिक्स करें और दबा के 10 मिनट के लिए रख दें। अब इसे छलनी की सहायता से छान लें, एक कड़ाही में घी गर्म करें और छाने हुए बेसन को सेकना चालू करें। 10 मिनट मीडियम आंच पर हिलाते हुए सेंके, फिर मावे को हाथ से मसलकर मिक्स करें और 3 से 4 मिनट तक सुनहरा होने तक और सेंके। अब एक पतीले में चीनी, केसर, इलायची पाउडर व एक कप पानी मिलाकर डेढ़ तार की चाशनी बनाएं। चासनी एकदम पतली नहीं होनी चाहिए। आप चम्मच से चेक कर सकते हैं, जो बूंद गिरती है उससे तार बनता है। अब तैयार चासनी को सिके हुए मिक्सचर में जावित्री पाउडर मिला दें और गैस की आंच एकदम से धीमी करें। दो मिनट तक चासनी को मिक्सचर में मिक्स करें और फ्लेम बंद कर दें। अच्छे से हिलाए और घी लगी हुई थाली में मिक्सचर को पलट दें। 15-20 मिनट बाद जब यह ठंडी हो जाए तब इस पर बरक, पिस्ते व केसर के रेशे से सजाएं और मनचाहे आकार में काट लें। हमारी स्वादिष्ट बेसन खोया चक्की तैयार हैं।

सामग्री

- एक कप बादाम
- 1/4 कप खरबूजे के बीज
- 1/4 कप तरबूज के बीज
- 1/4 कप काजू
- 10-12 इलायची
- 4-5 लौंग
- 1 बड़ी चम्मच काली मिर्ची
- 1 किलोग्राम शक्कर
- 4-5 अंजीर
- 4-5 मुनक्का द्राक्ष
- 1 बड़ा चम्मच पिस्ते
- 1 छोटी चम्मच केसर
- 1 छोटी चम्मच केवड़े का अर्क
- 1 छोटी चम्मच गुलाब का अर्क
- 1/4 कप गुलाब की सूखी पत्तियां
- 1/2 कप सौंफ
- 1/4 कप खसखस

बनाने की विधि

चीनी को छोड़कर सभी सामग्री को 2-3घंटे के लिए अलग-अलग बाउल में भिगो दें। केसर को केवड़े व गुलाब के अर्क में भिगो दें। अब बादाम और पिस्ते के छिलके उतार लें मुनक्का के बीज निकाल लें। अब मिक्सी के जार में बादाम, पिस्ते, अंजीर, खसखस और सभी सामग्री मिलाकर महीन पेस्ट बना लें थोड़ा सा पानी भी मिला लें। थोड़ी केसर को साथ में और थोड़ी सी बाद में डालने के लिए अलग बचा लें। एक पतीले में चीनी डालें और एक गिलास पानी डालकर चासनी बनाएं। जब चासनी में उबाल आ जाए तो तैयार किया हुआ पेस्ट मिलाकर अच्छे से मिक्स करें और 5 से 7 मिनट तक पकने दें।

अब हमारी ठंडाई तैयार है। ठंडा होने पर इसे बड़े छेद की छलनी से छान लें। केसर मिलाकर कांच की बोतल में भर लें, जब भी ठंडाई पीने का मन करे तब दो चम्मच ठंडाई सिरप में दूध मिलाकर मिक्सी में फेटकर ठंडाई का आनंद ले।

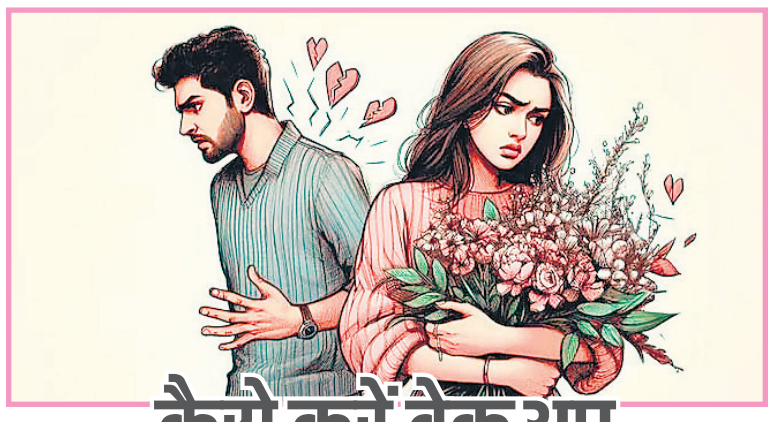

कैसे करें ब्रेकअप

यदि संबंध खत्म करने का फैसला आपका है तो याद रहे कि यह इतना आसान नहीं होगा। हम सभी उम्मीद करते हैं कि हमें जीवन में ये पल कभी न देखना पड़े, लेकिन जब संबंध ही दुःख के कारण बन जाएं तो ये फैसला लेना ही पड़ता है। पहले से तैयारी कर लें। आप किन वजहों से संबंध खत्म कर रहे हैं ये खुद जान लें, क्योंकि ये आप को अपने साथी को समझना पड़ेगा। कारणों का चिंतन करना जरूरी है। चिंतन आपको इसके लिए तैयार तो करता ही है, साथ ही साथ आपको अपने इस फैसले पर पुनर्विचार करने का मौका भी देता है।

डॉ. यतींद्र धर
काउंसलर

अगर संभव हो तो ये खबर खुद मिलकर देना बेहतर है, बजाय फोन या मोबाइल संदेश के। रिश्ते का अंत अगर मुलाकात और सही बातचीत के साथ हो तो अपनी जिंदगी को इस रिश्ते के बाद सामान्य करना आसान हो जाता है।

यह बात करने के लिए ऐसे स्थान का चुनाव करें जहां आप दोनों सहज महसूस कर सकें। भीड़-भाड़ वाला रेस्टोरेंट या बहुत से अजनबियों के बीच शायद थोड़ा अटपटा लगने कि संभावना हो सकती है। ऐसी जगह चुने जहां आप दोनों सुरक्षित और सहज महसूस करें। सच बोलें। अपने साथी को साफ-साफ बता दें कि अपने ये फैसला क्यों लिया? उन्हें बताएं कि आपके अनुसार रिश्ते में क्या गलत था। सुनने में कड़वा जरूर लगेगा, लेकिन सच कह देना बेहतर है। उन्हें ये पता तो होना चाहिए कि संबंध खत्म होने कि वजह क्या है।

संबंध टूटना अपने आप में ही दुखद और कड़वा एहसास है तो कटु शब्दों से इसे और दुखद बना ठीक नहीं। ईमानदारी से बात कहना और क्रूर होने में फर्क है। सच को बिना आघात पहुंचाए प्रस्तुत करिए। कोई शंका न रखें। अपने साथी के या अपने मन में कोई झूठी उम्मीद न रखना ही अच्छा होगा।

उनकी खराब प्रतिक्रिया के लिए तैयार रहे, जो आप कहेंगे वो सुन्ना उनके लिए शायद आसान नहीं होगा तो यदि आपकी बात सुनकर प्रतिक्रिया स्वरूप आपके साथी को रोना आ जाए या गुस्सा आ जाए तो धैर्य से काम लें।

अपने फैसले पर कायम रहे। जब एक बार सब कुछ प्रयास करने के बाद आपने मन बना लिया है तो अब अपने फैसले से पीछे हटना सही नहीं है। 'एक और मौका' देना शायद अब काम नहीं आएगा।

साप्ताहिक राशिफल

-पं. मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष — इस सप्ताह के पूर्वार्ध में जहां आपके काम तेजी से बनते हुए नजर आएंगे तो वहीं उत्तरार्ध में कामकाज से जुड़ी दिक्कतों आपके लिए परेशानी का सबब बनेगी। आपको विरोधियों की बातों को नजर अंदाज करते हुए अपने काम पर ध्यान देना उचित रहेगा।

वृष — इस सप्ताह आपको धन, ऐश्वर्य और पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होगी। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो आपको कार्यक्षेत्र में कार्य विशेष के लिए सम्मानित किया जा सकता है अथवा किसी महत्वपूर्ण कार्य की जिम्मेदारी मिल सकती है। नौकरीपेशा लोगों की बहुप्रतीक्षित तबादले की कामना पूरी हो सकती है।

मिथुन — इस सप्ताह कोई बड़ा निर्णय लेते समय दिल के साथ दिमाग का भी पूरा इस्तेमाल करना होगा अन्यथा बाद में उन्हें अपने फैसले पर पछतावा करना पड़ सकता है। असमंजस की स्थिति में कोई बड़ा फैसला न लें। नौकरीपेशा लोगों को सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी।

कर्क — यह सप्ताह शुभता और सौभाग्य लिए है। यदि आप बीते लंबे समय से किसी कार्य विशेष को पूरा करने लिए प्रयासरत थे तो आपको उसमें मनचाही सफलता प्राप्त हो सकती है। कार्यक्षेत्र में उच्च अधिकारी आप पर पूरी तरह से मेहरबान नजर आएंगे जिसके कारण कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी।

सिंह — यह सप्ताह थोड़ा उतार-चढ़ाव लिए रहने वाला है। साथ ही सकारात्मक रहने वाली है। इस दौरान भूमि-भवन से जुड़े विवाद को दूर करने में आप काफी हद तक सफलता प्राप्त कर सकते हैं। सरकारी कामकाज में आ रही समस्याएं दूर होंगी। परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों को सुखद समाचार की प्राप्ति होगी।

कन्या — इस सप्ताह अपने समय, धन एवं ऊर्जा का प्रबंधन करके चलते हैं तो उन्हें अपेक्षा से अधिक सफलता और लाभ की प्राप्ति संभव है। सप्ताह के पूर्वार्ध में आपको अपने करियर-कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए बड़े अवसर प्राप्त होंगे। इस दौरान पैतृक संपत्ति से जुड़े विवाद को सुलझ जाने पर आप राहत की सांस लेंगे।

तुला — यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ और लाभप्रद रहने वाला है। इस सप्ताह आपको कार्यक्षेत्र में अचानक से कोई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी अथवा पद मिल सकता है जिसके चलते आपके भीतर उत्साह और ऊर्जा देखने को मिलेगी। यदि आप बेरोजगार हैं तो आपको मनचाही नौकरी मिल सकती है।

वृश्चिक — इस सप्ताह आपका मन एक जगह स्थिर नहीं रहेगा। आप पल-पल में अपने इरादे बदलते हुए नजर आएंगे। यदि आप अपने मन की चंचलता पर काबू नहीं पा पाते हैं तो आपको बड़ा नुकसान झेलना पड़ सकता है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए किसी भी निर्णय को जल्दबाजी में न लें और किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूरे मनोयोग के साथ कार्य करें।

धनु — इस सप्ताह आपको अपने करियर-कारोबार में कुछेक अड़चनों का सामना करना पड़ सकता है। व्यवसाय से जुड़े लोगों को बाजार में अपनी साख बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। कई बार आप हताशा में अपने व्यवसाय में बदलाव करने का विचार ला सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों के कामकाज अथवा जिम्मेदारियों में अचानक से बड़ा बदलाव हो सकता है।

मकर — यह सप्ताह की शुरुआत में नौकरीपेशा लोगों को कामकाज की अधिकता रह सकती है। इस दौरान आपको अतिरिक्त परिश्रम और प्रयास करना पड़ सकता है। कामकाजी महिलाओं को कार्यक्षेत्र और घर-परिवार के बीच तालमेल बिठाने में मुश्किलें आ सकती हैं।

कुंभ — इस सप्ताह आलस्य और अभिमान को छोड़कर पूरे मनोयोग से अपने कर्म को करना होगा। जिंदगी में कुछेक अड़चनें आ सकती हैं जिन्हें आप अपनी बुद्धि और विवेक से दूर करने में कामयाब हो जाएंगे। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपको कारोबार से जुड़ा कोई भी बड़ा फैसला लेने से पहले अपने शुभचिंतकों की सलाह जरूर लेना चाहिए।

मीन — यह सप्ताह सामान्य रहने वाला है। आपको कारोबार में धीमी गति से ही सही, लेकिन लाभ की प्राप्ति होगी। किसी नई योजना से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा। इस दौरान शासन-सत्ता से जुड़े लोगों के साथ नजदीकियां बढ़ेंगी और आप उनकी मदद से पुरानी समस्याओं को हल करके सुख की अनुभूति करेंगे।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 74

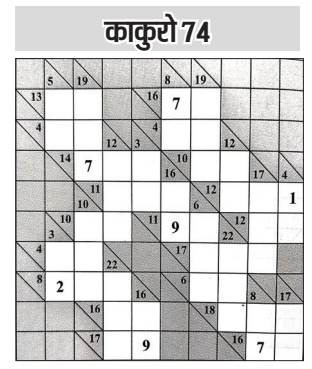

काकुरो 73 का हल

थानेदार रवि किशन

'फिल्म लापता लेडीज' में रवि किशन थानेदार बने हैं। मैंने इतना असली पुलिस वाला पहले कभी हिंदी फिल्मों में देखा हो, याद नहीं। इस फिल्म में रवि किशन ने कमाल किया है। वो राजा हैं अपने देहाती इलाके के था के। मन की करता है। किसी से नहीं डरता। किसी की धौंस में नहीं आता। सरेआम दिन दहाड़े, ठोक कर रिश्वत लेता है। यह मानकर लेता है कि यह हक है उसका। हर केस के मिजाज के हिसाब से रेट फिक्स कर रखे हैं। एक गाना गाने वाली जब अपने लड़के को पुलिस की गिरफ्त से छुड़ाने के लिए तय रकम नहीं दे पाती तो ये बाकी रकम के एवज में उससे गाना सुन लेता है, पर अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करता।

मुकेश नेमा
वरिष्ठ लेखक

फिल्म की दो दुल्हनों में से एक जो ट्रेन में हुई अदला-बदली की वजह से दूसरे दूल्हे के संग उसके थाने वाले गांव में चली आई है, उसे भगोड़ी दुल्हन मानकर उस पर नजर रखता है। उसके इरादे इस लड़की को गिरफ्तार कर मोटा माल कमाने के हैं। पर जब उसे पता चलता है कि वो लड़की सच्ची है, आगे पढ़ना चाहती है और उसका पति बदमाश है तो उसके पति के सारे रुपये छीनकर लड़की को उसके चंगुल से आजादी भी दिलवा देता है। कृतज्ञ लड़की इसके एवज मे अपने सारे गहने देना चाहती है तो ये पुलिस वाला उससे केवल ससुराल से मिले मंगलसूत्र और कंगन लेना मंजूर करता है और उन्हें निर्विकार भाव से अपने टेबल की ड्रॉज के हवाले कर देता है।

रवि किशन की बॉडी लैंग्वेज। उसकी शातिर आंखें। उसका पान चबाना। बोलने बताने का अंदाज मोह लेगा आपको। ये पुलिस वाला अच्छा भी है और बुरा भी। अपना फायदा सोचता है, पर उसके अंदर का इंसान जिंदा बना हुआ है। कुल मिलाकर हमारे जैसा ही है ये बंदा। हमारे समाज का सच्चा प्रतिनिधि। इस अकेले आदमी ने 'लापता लेडीज' को देखने लायक फिल्म बना दिया है। यदि आपके पास फुरसत हो तो आपको इससे मिल ही लेना चाहिए।

सामाजिक समस्या की फिल्म कागज 2

मूलतः यह फिल्म एक सामाजिक समस्या के बारे में है, जो आज के राजनीतिक परिवेश से उत्पन्न हुई है। सड़कों पर अधिक गाड़ियों के अतिरिक्त राजनीतिक रैलियों जुलूसों के कारण जो जाम लगता है, उसमें सामान्यजन के बहुत सारे अत्यावश्यक कार्य समय पर नहीं हो पाते। बीमार हॉस्पिटल नहीं पहुंच पाते, मृत्यु तक हो जाती है, बच्चे परीक्षा केंद्र नहीं पहुंच पाते, उनका वर्ष बेकार हो जाता है, बेरोजगार नौकरी की परीक्षा देने से वंचित होकर जीवनयापन में असफल हो जाते हैं, समय निकल जाने से बहुत से काम अपनी महत्ता और उपयोगिता खो देते हैं। इस सबका कारण होता है सड़कों पर लगा वह जाम जो वहां नहीं होना चाहिए था।

फिल्म की कहानी में यूपीएससी में प्रथम आई एक होनहार लड़की जो भविष्य की सरकारी अधिकारी बन सकती थी, उसकी चोट का इलाज एक रैली के कारण वक्त पर नहीं हो पाता और मर जाती है। अदालत में यह केस अनुपम खेर वकील की हैसियत से सतीश कौशिक के लिए जो उस लड़की का पिता है, लड़ता है। फिल्म का विषय और उद्देश्य दोनों महान हैं, कलाकार और उनकी अदाकारी भी अच्छी है। केस में दिए गए तर्क भी भावुकता और आम आदमी के लिए उचित हैं और यह सब फिल्म के उत्तरार्द्ध में लगभग 55 मिनटों में होता है।

ब्रज राज नारायण सक्सेना
मथुरा

फिल्म को सामान्यतः सराहा गया है आईएमडीबी रेटिंग भी 8.9 है, परंतु केवल समस्या उठाने के लिए मुझे यह थोड़ी ज्याद लगी है। मैं इसे उचित मानता यदि पूरी फिल्म इसी विषय पर होती और विषय को पूरी गहराई में उतरकर राजनीतिक और कानूनी बारीकियों के साथ दिखाया जाता। कहानी में हीरो (दर्शन कुमार), हीरोइन (स्मृति कालरा) उसकी मां (नीना गुप्ता) हीरो की आईएमए की दास्तान, प्रेम कहानी, इत्यादि सबकुछ सिर्फ एक कहानी गढ़ने के लिए बनाए गए हैं जिनका मूल विषय से कोई संबंध नहीं है। हालांकि कलाकारों ने जो भी उन्हें मिला उसे ठीक से निभाया है। कहानी कहने का ढंग भी नहीं जमा। कागज फिल्म का सीक्वेल बनाने के लिए कागज शब्द का जबरदस्ती प्रयोग हुआ है। यदि सतीश कौशिक और अनुपम खेर के नाम न होते तो ज्यादा रेटिंग नहीं हो पाती। मैं एक बहुत ही गंभीर मसले पर इस प्रकार की सामान्य फिल्म बनाने के लिए शायद 5 की रेटिंग देता।

उत्तराखंड के परंपरागत जल स्रोत

शिल्प एवं वास्तु के दृष्टिकोण से एक बेहद खूबसूरत नौला चंपावत के करीब देखा जा सकता है। स्थानीय लोग इसे आम बोलचाल में 'एक हथिया नौला' कहते हैं। मानव सभ्यता के विकास में जल स्रोतों की अभिन्नता से हम सब वाकिफ हैं। जल है तो जीवन है इसीलिए "जल ही जीवन है" की उक्ति गढ़ी गई और जल में देवत्व का आरोपण किया गया। क्रमशः नदी-समुद्र सब देवता की तरह पूजे जाने लगे। मैदान में सभ्यताएं नदियों के किनारे बसी और पहाड़ों में नौलों के करीब छुटपुट गांव उग गए। आबादी के इन हिस्सों के नाम भी ऐसे पड़े जंप-नौला, धारा-नौला वगैरह, जो रोजमर्रा की जिंदगी में नौले के महत्व को रेखांकित करते हैं।

आमतौर पर नौले की संरचना को तीन तरफ पत्थर से घेर दिया जाता है। भीतर का हिस्सा गहराई में संकरा होता है। उसी में पानी जमा होता है। चूंकि जल पवित्रता और कर्मकांड से अभिन्न है,इसलिए कभी-कभी नौले को कलात्मक मंदिर का रूप भी दे दिया जाता है।

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

चंपावत का 'एक हथिया नौला' कुछ ऐसा ही है। किंवदंती है कि इसे बनाने वाले शिल्पी का एक हाथ कटा हुआ था इसलिए यह एक हथिया नौला कहलाया। किंवदंती का विस्तार यह है कि जिस शिल्पी ने चंपावत के खूबसूरत बालेश्वर मंदिर को गढ़ा था उसका एक हाथ राजा ने अपने दुष्ट सामंतों के कहने पर कटवा दिया। इस दारुण स्थिति से भयभीत शिल्पी विपिन्न अवस्था में अपनी अल्पवयस्क पुत्री को साथ लेकर प्राणभय से जंगल के आश्रय में आ गया। जंगल प्रवास के दौरान ही उसने एक हथिया नौले के विशिष्ट शिल्प को प्रतिशोध में जन्म दिया।

उत्तराखंड के अनेक पूज्य स्थल ऐसे हैं,जो महाकाव्य महाभारत से अपनी अभिन्नता दर्शाते हैं। एक हथिया नौला से जुड़ी हुई एक लोक मान्यता के अनुसार, 'पांडव जब इस क्षेत्र में आए थे तब उन्होंने देवालयों के निर्माण की ऐसी परंपरा को जन्म दिया जिसमें देवालय बनाने का काम एक रात में ही संपन्न किया जाता था। यह प्रथा कुमाऊं के शासक वंश चंद राजाओं के समय तक चलती रही। एक हथिया नौले का निमार्ण चंद शासकों के शासन काल में हुआ। नौले के संबंध में भी यह आम धारणा है कि इसका निर्माण एक रात में ही किया गया था। किंतु रात भर में इसे पूर्ण रूपेण बनाया नहीं जा सका। इस वजह से इसके गर्भ गृह में प्राण प्रतिष्ठा नहीं की जा सकी। वह खाली ही रहा। एक हथिया नौला अपने कलात्मक और शिल्पगत सौंदर्य की वजह से सब का मन मोह लेता है। इसके प्रवेश द्वार के दोनों ओर अलग-अलग रथिकाओं में गणेश की मूर्तियां सज्जित हैं। बरामदे में लघु देवालय नुमा संरचना है। इसका अनुमानित समय 13 वीं-14 वीं शताब्दी ईसवी बताया जाता है। यह अनुमान प्रतिमाओं और भित्ति पर किए गए अलंकरण के आधार पर लगाया गया है। नौले से कुछ दूरी पर ही बालेश्वर मंदिर है। नौले और बालेश्वर मंदिर, दोनों की प्रतिमाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी इनके तिथि निर्धारण में सहायक है। हथिया नौले से प्राप्त एक सूर्य प्रतिमा बेहद आकर्षक है। इस प्रतिमा पर ईरानी प्रभाव है अर्थात् सूर्य को बूट (लंबा जूता/उद्दीच्य धारी) धारण किए हुए दर्शाया गया है।

नौला

उत्तराखंड में परंपरा गत जल स्रोत नौला कहलाता है। नौला ऐसे स्रोत पर बना होता है,जहां पानी जमीन से रिस-रिस कर पहुंचता है। अपनी संरचना में नौला कुछ-कुछ बावड़ी की तरह ही होता है। यह आमतौर पर तीन तरफ से पत्थरों की दीवार से घेर दिया जाता है। ऊपर से स्लेट की छत डाल दी जाती है। भीतर जिस जगह जल एकत्रित होता है उसका आकार वर्गाकार पिरामिडिकल होता है, जो ऊपर की ओर चौड़ा रहता है तथा नीचे की ओर क्रमशः धीरे-धीरे संकरा होता जाता है।

चुपटौल

नौलों का एक दूसरा प्रारूप भी मिलता जिसको चुपटौल कहते हैं। नौले की तुलना में चुपटौल अपनी बनावट में अनगढ़ होता है। इसमें जल स्रोत के पास गड्ढा करके सपाट पत्थरों की बंध बनाकर पानी को रोक दिया जाता है। इसमें छत का अभाव होता है।

धारा/ मंगरा

धारे अथवा मंगरे उत्तराखंड के सर्वाधिक प्रचलित पारंपरिक जल स्रोत हैं। यह जमीन की सतह से थोड़ा ऊंचाई पर बने होते हैं। पहाड़ का भूमिगत जल जब स्रोत के रूप में फूटकर बाहर निकलता है तो उसे यहां के निवासी पत्थर अथवा लकड़ी का पतनाला बनाकर उस जल को धार का रूप प्रदान कर देते हैं ताकि उसके नीचे जलपात्र रखकर पानी आसानी से भरा जा सके।

एक हथिया नौला

उत्तराखंड में पेयजल हासिल करने के लिए नौलों-धारों की परंपरा रही है। हिमालयी क्षेत्र में गांवों की बसावट का सर्वेक्षण किया जाए तो इस बात की जानकारी मिलती है कि गांव बनने की प्रक्रिया में आवासीय भवन पहले-पहल इन्हीं जल स्रोतों के आसपास विकसित हुए। उत्तराखंड में स्थानीय लोग इन्हें मंगरा, नौला या धारा कहते हैं। पूरे हिमालय क्षेत्र में इनकी संख्या पांच लाख के आसपास अनुमानित है। इतिहासकार ये मानते हैं कि उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में ज्यादातर नौले मध्यकाल में बने।

कला पक्ष

- वास्तुकला की दृष्टि से इस नौले की संरचना जगती पर आधारित है।
- तलछंद योजना में वर्गाकार जलाशय दो स्तंभों पर आधारित वितान सहित बनाया गया है। कुंड के चारो ओर प्रसाधित प्रस्तर खंड की दीवारें हैं।
- स्तंभों पर आधारित मंडप है। द्वार के दोनों ओर दो छोटे-छोटे चबूतरे बनाए गए हैं।
- शिल्प एव शैली की दृष्टि से स्मारक की संपूर्ण भित्तियां मंदिरों की अनुकृतियों, मानवाकृतियों एवं विभिन्न प्रकार की नक्काशी से सुसज्जित हैं। दो मीटर ऊंची दीवारों को दो भागों में बांटा गया है।
- निचले हिस्से में सादा बार्डरनुमा अलंकरण है। सादी पट्टी के ऊपर मानवाकृतियां बनाई गई हैं। इसमें नृत्यांगनाओं, वादिकाओं तथा पूजन के लिए तैयार स्त्रियों एवं देवाकृतियों के चित्र हैं।
- सामान्य मानवाकृतियां भी अलंकृत की गई हैं। प्रवेशद्वार को देवकुलिकाओं की आकृतियों से सजाया गया है।
- छत आकार में वृत्ताकार है। इसमें पक्षी युगल, मिथुन आकृतियां, विद्याधर आदि बनाए गए हैं।
- प्रवेशद्वार की रथिकाओं में गणेश स्थापित किए गए हैं।
- मंडप की दीवारों पर भी भीतरी दीवार की तरह ही देवकुलिकाएं बनाई गई हैं। मंडप की छत को सोपानों में उठाया गया है।
- इसमें नृत्यांगनाओं के चित्र विशेष रूप से दर्शनीय हैं।
- द्वितीय पट्टी में कुल्हाड़ी जैसी वस्तु हाथ में लिए आकृति है।
- तृतीय पंक्ति में सर्पारूढ़ पुरुष, बरामदे में अश्वारोहियों की मूर्तियां बनाई गई हैं।
- वितान में संयुक्त शीर्ष वाली पांच नर्तकियां भी विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। स्त्री आकृतियां अलंकरण के साथ प्रदर्शित हैं। उनके वस्त्राभूषण (वस्त्र और पैर में पहनी गई पाजेब) शिल्पगत दक्षता की परिचायक हैं।

पौराणिक लिंगोद्भव कथाएं

डॉ. अंकित जायसवाल
गोरखपुर

मूर्तिकला में शिव के साथ चंद्रमा का अंकन चीन से आने वाले कुषाणों के समय शुरू होता है,क्योंकि चंद्रमा का चीनी परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान है। शिव और पार्वती का नाम आते ही शिवलिंग पूजा की ओर ध्यान जरूर जाता है। ये कहां से शुरू हुआ, क्या पौराणिक लिंगोद्भव वाली कथाएं ही इस शिवलिंग पूजा के लिए जिम्मेदार हैं? ऐसा मानना, अपने साहित्यिक धर्मग्रंथों पर आंख मूंदकर,उन पर असीम श्रद्धा रखना हो सकता इससे आगे कुछ और नहीं।

असल में लगभग सभी प्राचीनतम सभ्यताओं में प्रजनन और काम क्रिया से जुड़े प्रतीकों की पूजा के साक्ष्य मौजूद हैं। लिंग पूजा के स्पष्ट प्रमाण प्राचीन मिस्र के सभ्यता में दिखती है। साहित्यिक मान्यता है कि मिस्र में आइसिस ने लिंग पूजा शुरू की। आइसिस प्राचीन रोम की एक देवी भी थीं, जहां उनके मंदिर में हमेशा अग्नि प्रज्वलित रहती थी। यहां पुजारी आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करता है,जबकि अग्नि को जलाते रहने का कार्य कुमारी कन्याओं का था। शिव का अग्निरूप तृतीय नेत्र और उससे कामदेव का का भस्म होना इससे कितना जुड़ा हुआ है, बहुत निश्चित नहीं।

फिर भी हम देखते हैं कि भारतीय परिवेश में लिंग पूजा से संबंधित देवता जो "शिव" हैं, वे ज्ञान का स्वरूप हो गए। जबकि काम दहन को अज्ञान का नाश के रूप में साहित्य में चित्रित किया गया है। इसी प्रकार शिवलिंग को अग्नि और "योनि" को "यज्ञवेदी" भी माना गया है। यह काम शुरुआती वैदिक लोगों का नहीं है,क्योंकि उन्होंने तो "शिश्न पूजा" को हेय दृष्टि से देखा है। यह ऋग्वेद रचना के थोड़े समय बाद की घटना है जब वैदिक और गैर-वैदिक लोग आपस में घुल-मिल गए थे,लेकिन संपूर्ण विश्व में फैली प्रजनन अंगों की पूजा के स्वरूप को कोई बदल न सका,ये प्राचीन समय से आजतक प्रजनन अंग के रूप में जरूर बनता रहा है,चाहे इस लिंग को भले ही कुछ अन्य दार्शनिक मान्यताओं के साथ जोड़कर अपने ही धर्मग्रंथों में इसकी पहचान मिटाने की कोशिश की गई।

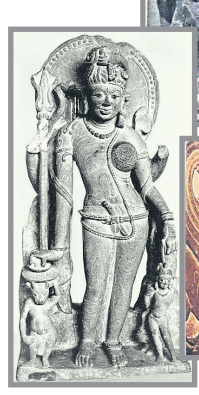

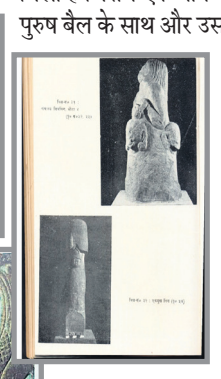

लिंग पूजन वाले समुदाय जो प्राचीन काल से ही यहां फैले हुए थे इनका शिव की उपासना के साथ जुड़ाव आर्कियोलॉजी (ध्यान दें साहित्य के हिसाब से कुछ और सदियां पहले) के हिसाब से 200 ई. पू. के आसपास जुड़ता दिखाई देता है,क्योंकि इसी समय से निश्चित रूप से शिवलिंग (अब निश्चित कहा जा सकता है कि लिंग और शिव एक दूसरे के समानार्थी हो गए हैं) पूजा के साक्ष्य मिलने शुरू होते हैं। इसी कालखंड में मथुरा का भूतेश्वर मंदिर से मिला पीपल वृक्ष के नीचे वेदिका से घिरे शिवलिंग है जिसे पंखों वाले दो मानव पूजा कर रहे हैं, लिंग पर एक से अधिक मुख बनाए गए हैं,जो बाद की मूर्तिकला के अनिवार्य हिस्सा बन गए, वही जिसको देखने में छोटे स्तूप पर बुद्ध मुख जैसा भ्रम भी हो सकता है,क्योंकि दोनों कहीं एक ही जगह से अपनाए गए हैं। इसी भ्रम का फायदा उठाकर कई शिव मंदिरों में बुद्ध-स्तूप शिवलिंग के रूप में आज भी पूजे जा रहे हैं।

पहली सदी के ही आसपास तक्षशिला और उज्जैन से प्राप्त कुछ सिक्कों पर भी लिंग और शिव के साथ बैल मौजूद है (इसे कनिंघम उज्जैन के महाकाल का पुराना रूप मानते हैं) बाकी इस समय देशी राज्यों के सिक्कों के साथ ही विदेशी शासकों के सिक्कों पर भी शिव के लक्षणों वाले पुरुष को देखा जा सकता है जिसके साथ विदेशी प्रभाव समाहित है। इसी समय का एक सोने का पत्तल भी मिला है जिसमें एक भाग में शिव जैसे पुरुष बैल के साथ और उसके पट भाग में एक पुष्प लिए उनकी पत्नी को दिखाया गया है।

कुषाणों के समय तो शिव के पूरे परिवार की मूर्तियां, सिक्कों पर मिलनी शुरू होती हैं जिसमें उमा का नाम भी खुदा है। कार्तिकेय अंकन वाला भी सिक्का है जिसके तीन नाम मिलते हैं इन्हीं सिक्कों पर अहासेन (महासेन),स्कंदकुमार और विशाख के रूप में (सिक्कों से ऐसा लगता है कि ये तीन कभी अलग-अलग देवता थे जिनका अब सम्मिलन कार्तिकेय के रूप में हो गया)। नंदी के साथ त्रिशूलधारी शिव के रूप (नाम नहीं) का अंकन आरंभिक कुषाण शासक वीम कडिफिसेस के सिक्कों पर मिल जाता है। पहली बार इस देवता का नाम ओयशो (यवेश या हवेश) मिलता है, कोई इसे भी बुद्ध न समझे,क्योंकि बुद्ध वाला सिक्का "बोद्दो" और शकमानो बोद्दो नाम से मौजूद है।

आज कुछ लोग शिव नाम को बुद्ध के साथ जोड़ रहे, लेकिन ये लोग शिव के लिंग (प्रजनन-अंग) को कहां ले जाकर स्थापित करेंगे ये देखने वाली बात है,क्योंकि पहली सदी के कुषाणकालीन मथुरा कला में शिव और पार्वती के आधे-आधे शरीर वाले अर्धनारीश्वर की मूर्ति मिल चुकी है जिसमें इरिटेट लिंग और योनि का चित्रण साफ देखा जा सकता है। इस मूर्तिफलक का सबसे बायीं ओर की प्रतिमा देखें, लिंग-योनि के साथ केवल एक ओर "स्तन" स्पष्ट दिख रहा। अर्थात् जब पहली सदी में अर्धनारीश्वर आ गए थे वो भी मूर्ति के रूप में तो केवल शिवलिंग का कांसेप्ट कितना प्राचीन हो सकता है? कुछ समय पहले जैनों और आदिवासियों के बीच सम्मेद शिखर को लेकर विवाद के कारण मोरंग-बूरा के खूब चर्चे हुए थे। 'मोरंग-बूरा' संथालों के स्थानीय देवता हैं,जो प्रतीकात्मक तौर पर एक विशाल पत्थर के रूप में पूजे जाते हैं। इन्हें खुश करने के लिए पशुओं की बलि दी जाती है।

ये मोरंग-बूरा देवता धरती के निर्माण अर्थात् सृष्टि के निर्माणकर्ता के रूप में जाने जाते हैं,जिन्होंने धरती पर इंसानों की पहली जोड़ी (स्त्री और पुरुष) को जन्म दिया था। इसी पहली मानव जोड़ी के सम्मिलन (मिथुन रूप में) से मानव जाति का विकास हुआ। ठीक यही बात अर्धनारीश्वर की अवधारणा में भी देखा जा सकता है कि एक पुरुष और स्त्री के सम्मिलन से सृष्टि का सृजन और विकास हुआ था। ऐसा मनाने के पर्याप्त सबूत हैं कि अर्द्धनारीश्वर की अवधारणा का आधार आदिवासी परंपरा थी। ऐसे ही ग्रामीण स्थानीय देवता के रूप में "भूमिया देव" प्रसिद्ध हैं जिनके साथ एक पवित्र बैल (शिव के साथ नंदी का कॉन्सेप्ट यही से लिया गया था?) और मृत पूर्वजों (जो शिव के साथ भूत-पिशाच आदि गण रहते हैं) की पूजा की जाती है। इनकी पत्नी हैं "भूमेश्वरी देवी"। इस "भूमिया" देवता की विशेषताओं को शिव-महादेव में स्पष्ट देखा जा सकता है जहां 'शक्ति'(शाक्त पंथ की अधिष्ठात्री देवी) के रूप में भूमेश्वरी देवी भी मौजूद हैं। ब्राह्मण/हिंदू धर्म के देवताओं के साथ आदिवासी देवताओं को आत्मसात करने की परंपरा बहुत पुरानी है।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

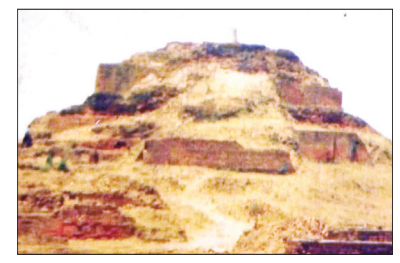

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

अहिच्छत्र में वैदिक धर्म

सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में पंचाल तथा अहिच्छत्रा का उल्लेख प्राचीन साहित्य में बहुत मिलता है। वैदिक काल में पंचाल जनपद की प्रतिष्ठा बढ़ी-चढ़ी थी। वहां वैदिक धर्म के अनुयायी बड़ी संख्या में निवास करते थे। वहां की भाषा की श्रेष्ठता की चर्चा वैदिक साहित्य में मिलती है। ब्राह्मण ग्रथों के अनुसार अनेक प्राचीन गाथाओं का निर्माण इसी जनपद में हुआ। यहां के राजाओं द्वारा किए गए अश्वमेध यज्ञ, राजसूय तथ नैमिषीय यज्ञों का वर्णन ब्राह्मण ग्रंथों में किया गया है। तत्कालीन राजा लोग राजर्षित्व और ब्रह्मर्षित्व दोनों में ही योग्य थे। पंचाल शासकों की राज सभाओं में ऋषि, मुनि ब्रह्मचारी जाकर उपनिषद-ब्रह्मज्ञान की चर्चा किया करते थे। महाभारत के पश्चात् गौतम बुद्ध एवं महावीर स्वामी द्वारा स्थापित धर्मों से पूर्व यहां वैदिक धर्म का उत्थान ही रहा। इसके बाद अहिच्छत्र एवं पंचाल में हिंदू, बौद्ध एवं जैन तीनों धर्मों का प्रचार-प्रसार हुआ,लेकिन वैदिक धर्म भी पौराणिक रूप में निरंतर फलता-फूलता रहा। शुंग काल से लेकर गुप्त काल तक तथा परवर्ती काल में यहां वैदिक अथवा ब्राह्मण (हिंदू) धर्म भी यहां रहा। साहित्य में भी विभिन्न वर्णन प्राप्त हैं तथा उस काल की विभिन्न मूर्तियां, मंदिर भी निकले हैं तथा मुद्राओं पर भी हिंदू देवी देवताओं के चित्र मुद्रित हैं।

अहिच्छत्र एवं पांचाल में हिंदू धर्म के शैव, वैष्णव एवं शाक्त मतों के अनुयायी होने के प्रमाण भी बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। यहां से प्राप्त राजाओं की मुद्राओं पर भगवान शिव से संबंधित प्रतीक चिह्न नंदी, परशु एवं त्रिशूल अंकित हैं। अहिच्छत्र से एक बड़े शिव मंदिर के अवशेष भी प्राप्त हैं। ह्वेनसांग ने यहां शिव मंदिर होना लिखा है। शिव के अतिरिक्त भगवान

विष्णु, देवी एवं सूप्य की पूजा भी होती थी। विष्णु का किरीट धारी सिर, देवी मूर्तियां, गंगा, यमुना, एवं पार्वती की मूर्तियां यहां से प्राप्त हुई हैं,जो राष्ट्रीय संग्रहालयों में संगृहीत हैं।

अहिच्छत्र में बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म दोनों का प्रादुर्भाव लगभग एक ही काल में हुआ था तथा दोनों ही धर्मों को अहिच्छत्र के राजाओं एवं प्रजा ने अपनाया। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध ने पंचाल एवं अहिच्छत्र का भ्रमण किया। यहां सात दिन तक निवास किया था एवं यहां के नाग राजा को धर्मोपदेश देकर धर्म में दीक्षित किया था। मौर्यकाल में अशोक ने यहां उस स्मृति में स्तूप निर्मित कराए थे। महाराजा हर्ष के राज काल में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी यहां भ्रमण किया था उसने यात्रा विवरण में यहां बौद्ध मठ होने का उल्लेख किया है। अहिच्छत्र एवं अन्य पांचाल क्षेत्रों में अनेक बौद्ध मूर्तियां भी प्राप्त हुई हैं। महानुम्मग्ग जातक आदि बौद्ध ग्रंथों में यहां के बारे में अनेक वर्णन लिखे हैं। अहिच्छत्र से अभय मुद्रा में खड़े मैत्रेय नामक बोधिसत्व की अभिलिखित प्रतिमा मिली थी। महात्मा बुद्ध की दो प्रस्तर मूर्तियां मिली हैं। विभिन्न धार्मिक मुद्रांक प्राप्त हुए हैं,जो मठ एवं बिहार से धर्म प्रचार हेतु वितरित किए जाते थे। अहिच्छत्रा में एक यक्ष प्रतिमा मिली थी,जो अब लखनऊ संग्रहायलय में है उस पर लेख खुदा है :-

भिक्षुस्य धर्मघोषस्य फरगुल विहारा अहिच्छत्रा-अर्थात् अहिच्छत्रा के फरगुल बिहार में धर्मघोष भिक्षुक का दान। यह महत्वपूर्ण है यह कुषाण कालीन किसी मुख्य विहार का नाम है,जो अहिच्छत्रा नगरी में विद्यमान था। आंवला के रेलवे स्टेशन के पास रहटुइया के पास खंडहर से एक मुद्रांक मिला, उस पर लिखा है :- हरनकर विहारे संघस-अर्थात् हरनकर नामक बिहार से स्थित (भिक्षु) संघ का मुद्रांक। अहिच्छत्र से मिले एक अन्य मुद्रांक पर लिखा है :- सुधर्म महाविहारे। अहिच्छत्र से ही एक ऐसा शिलापट्ट प्राप्त हुआ है जिसमें भगवान बुद्ध के जीवन की चार महत्वपूर्ण घटनाएं-उनमें जन्म, सम्बोधि, प्रथम धर्मचक्र प्रवर्तन एवं महापरिनिर्माण को सुंदर ढंग से अंकित किया गया है। भारतीय संस्कृति में सर्वं धर्म समभाव की भावना को अपनाने की परंपरा रही है। उसी के अनुसार किसी भी धर्म को मानने वाला राजा के काल में अन्य धर्म भी फलते-फूलते रहे।

अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद...

दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन के व्यक्तित्व की एक विशेषता राजकीय मामलो में पैनी नजर थी। उसके गुजरात अभियान के समय उसे मिला किन्नर मलिक काफूर योग्यता के बल पर बढ़ते-बढ़ते राज्य के आला सेनापति की कुर्सी पर जा बैठा। सुल्तान बनने से पूर्व ही अलाउद्दीन का सामना देवगिरी के राजा रामचंद्र देव से हो चुका था। उस समय राजा रामचंद्र देव ने अलाउद्दीन की अधीनता मानते हुए प्रतिवर्ष कर देने का वायदा किया था। 1307 ई. से कुछ वर्ष पूर्व यह कर देना बंद था जिसके कारण अलाउद्दीन की दक्षिण विजय का श्रीगणेश हुआ। इसका एक अन्य कारण राजा कर्ण की बेटी देवलादेवी थी। अलाउद्दीन ने राजा कर्ण को परास्त कर उसकी पत्नी कमला देवी से विवाह कर लिया था। कमला देवी अब अपनी पुत्री देवलदेवी से मिलने को बेताब थी जो देवगिरी के रास्ते में थी। दिल्ली सल्तनत में अब विजय, युद्ध और अपार धनसंपदा को देखे जाने का दौर शुरू हुआ। सुल्तान ने मलिक कफूर को देवगिरी पर आक्रमण करने हेतु भेजा। राजा रामचंद्र देव परास्त हुआ,किंतु उसे सम्मान सहित दिल्ली लाया गया। सुल्तान ने उसे नवसारी की जागीर और एक लाख टंका मुद्राएं दी,साथ ही अपने साथ सिहासन पर बैठाया। सुल्तान अपने दक्षिण अभियानों में एक वफादार मित्र की तलाश में था।

डॉ. विकास खुराना
शाहजहांपुर

वर्ष 1309 में काकतीय वंश की राजधानी वारंगल घेर लाई गई। राजा प्रताप देव ने अपने कद के बराबर सोने की मूर्ति बनाकर उसके गले में जंजीर डालकर मलिक काफूर के पास भेजी। अलाउद्दीन ने आत्मसमर्पण के इस तरीके को भी मान लिया। कोहिनूर हीरे सहित अकूत मात्रा में धन एकत्रित किया गया। अगला धावा होयसल नरेश वीर बल्लाल तृतीय पर हुआ,प्राप्त धनराशि एक हजार ऊंटों पर रखकर दिल्ली लाई गई। दक्षिण के शेष राज्यों में अब एक पांडय राज्य शेष था। जहां राजा कुल शेखर वर्मन का औरस पुत्र सुंदर पांडय और असली पुत्र वीर पांडय के मध्य गद्दी का झगड़ा था। मलिक कफूर ने बीच में हस्तक्षेप किया, रामेश्वरम तक भारी लूट थी,दिल्ली सल्तनत के घोड़े हिंद महासागर में पानी पी रहे थे,किंतु लाख कोशिश के बावजूद वीर पांडय हाथ नहीं आया। दक्षिण भारत की इस विजय ने अलाउद्दीन के राजत्व को सूर्य की भांति चमका दिया। अकूत धनसंपदा दिल्ली लाई गई,इसने महमूद गजनवी की उत्तर भारत की विजय को भी मात दे दी,किंतु यह विजय पूर्ण नहीं थी। जैसे ही दिल्ली की सेनाएं वापस होती,दक्षिण राज्य स्वतंत्र हो जाते। देवगिरी पर अलाउद्दीन के समय एक सौ सैंतालीस बार हमले किए गए। बाद में मलिक कफूर देवगिरी में ही रहकर शासन चलाता रहा। अलाउद्दीन अब बीमार पड़ गया था, उसके पाप उसके सिर आ पड़े जो उसने अपने चाचा जलालुद्दीन के साथ किया। अब भाग्य वही उसके साथ कर रहा था। मलिक काफूर ने सुल्तान की बीमारी का बहुत लाभ उठाया। उसने उसकी पत्नी तथा सास को सुल्तान से दूर कर दिया और जब सन् 1316 में अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई तब काफूर का निर्मम चेहरा सामने आ गया। उसने अलाउद्दीन के परिवार के सभी बच्चों का वध करवा दिया, सिर्फ एक मुबारक शाह खिलजी के जिसे हजार सतून के महल में बंद किया गया था। जीवित रहा और आगे उसने अपने आप को यौमीन उल खिलाफत कहकर पुकारा, जिसका अभिप्राय था " मैं खलीफा हूं"।

दारा शिकोह का विमर्श

हम अन्य विचारधाराओं, संस्कृतियों, मान्यताओं इत्यादि के प्रति रखते हैं। सूफीवाद इस्लाम की उदार धारा की वाहक समझी जाती है,यद्यपि सूफी मत भी दो मूल धाराओं में विभाजित है-वजूदी और शुहुदी, जिन्हें भारतीय दर्शन के संदर्भ में क्रमशः अद्वैतवादी और द्वैतवादी कहा जा सकता है। भारत के संदर्भ में भी दोनों धाराओं के बीच संघर्ष का एक इतिहास है। शाह वली उल्लाह (1703-1762) के अनुसार इनके बीच केवल तशबिह (उपमा) और इस्ते'आरे (रूपक) का अंतर है। उनका यह कथन दोनों मतों के संघर्ष के आलोक में सही तस्वीर प्रस्तुत नहीं करता। नक्शबंदी सिलसिला शुहुदी मत का वाहक रहा है। नक्शबंदी संप्रदाय से संबद्ध मौलाना अहमद अल-सिरहिंदी(1564-1624/25) मुजादिद-ए-अल्फ-ए-सानी (द्वितीय सहस्राब्दी के पुनरुद्धारकर्ता) के नाम से जाना जाता है, उनका सम्राट अकबर की धार्मिक नीतियों और राजनीति से तीव्र विरोध जग-जाहिर है। इसके अतिरिक्त अहमद सिरहिंदी वहदत अल वजूद के भी घोर विरोधी रहे हैं। उन्होंने इब्ने अरबी की तीव्र निंदा करते हुए कहा कि इब्न अरबी का सिद्धांत इस्लाम के साथ असंगत है,लेकिन यह भी स्थापित तथ्य है कि उनको इब्ने अरबी के दर्शन की गहरी समझ नहीं थी।

असग़र मेहदी
लखनऊ

मौलाना सिरहिंदी का सुन्नी इस्लाम से इतर मुस्लिम वर्गों, सिक्खों, गैर-मुस्लिमों, सूफियों आदि के बारे में बहुत नकारात्मक नजरिया था। बहरहाल सत्रहवीं सदी में वजूद और शुहुद की बहसें काफी तीव्र थीं और इस तीव्रता को सामयिक विदेशी यात्रियों ने भी महसूस किया है। औरंगजेब की ओर से भी दरबार और परिवार में नक्शबंदी सिलसिले को बढ़ावा दिया और शहजादों व शहजादियों को इसकी दीक्षा लेने का आदेश दिया गया था। दारा शिकोह से पूर्व सरकारी तौर पर अनेक ग्रंथों का फारसी में अनुवाद हुआ था,लेकिन इन अनुवादों में एक बात सामान्य थी कि अनुवादकों की अपनी इच्छा या दृष्टिकोण या समझ की कोई भूमिका नहीं होती थी। दारा शिकोह पहला अनुवादक और टीकाकार है जिसने बाकायदा एक दृष्टिकोण और उद्देश्य के तहत यह काम अंजाम दिया। उसके इस प्रयासों में संस्कृतियों के मध्य मिलान पैदा करने की भावना सक्रिय भूमिका अदा कर रही थी। यह सत्रहवीं सदी थी, दारा ने जो विमर्श प्रारंभ किया था उसका वजूद शायद ही तत्कालीन दुनिया के किसी कोने में हो। 'धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन' जैसे किसी शो' बे की नींव का तसव्वुर ही नहीं पैदा हुआ था। यह 'नए वर्ल्ड ऑर्डर' की कल्पना थी जहां शक्ति संतुलन के स्थान पर आपसी समझ और सौहार्द की भावना को सक्रिय भूमिका अदा करना थी। इसके विपरीत एक 'अनुदार' धारा थी, जहां तलवार और ऐसे धर्मगुरुओं का एक गठजोड़ था,जो उनके विशेष दृष्टिकोण से विचलित किसी भी धारा के प्रति हिंसा को उचित और धर्मत ठहराता था।

दारा शिकोह 'संवाद' और 'विमर्श' का पक्षधर था और उसके द्वारा हिंदू धर्म के मूल ग्रंथों से मुस्लिम समाज का परिचय योजना एक अनूठा प्रयास था। इब्राहिम लोदी के समय से फारसी विद्यालयों में पढ़ाई जाने लगी थी, इसके साथ इस्लामी ज्ञान का एक बड़ा हिस्सा फारसी में उपलब्ध होने के कारण हिंदू-मुस्लिम संवाद के लिए दाराशिकोह की योजना काफी प्रभावी साबित होती। संस्कृत की अनेक पुस्तकों का फारसी में अनुवाद भी हो चुका था, लेकिन हिंदू धर्म की मूल पुस्तकों का अनुवाद अभी भी एक जटिल कार्य था। सत्रहवीं सदी में एक गैर-ब्राह्मण और अहिंदू का क्लासिकल संस्कृत का ज्ञान हासिल करना आसान काम नहीं था। बनारस में पंडित प्रवर रामानंद त्रिपाठी से संस्कृत का ज्ञान हासिल करने के दौरान दाराशिकोह को उपनिषद,भागवत गीता,योग वशिष्ठ देखने का अवसर मिला। उपनिषद के अनुवाद और तशरीह(व्याख्या) के सिलसिले से प्रत्येक श्लोक पर उसकी अनेक प्रवरों से कई दिनों तक बहस होती थी। इस अनुवाद को उसने सिर्रे अकबर नाम दिया और घोषणा कि कि उसने उपनिषदों को इस्लाम के मूल सिद्धांत, 'तौहीद' के लिखित साक्ष्य के तौर पर पाया है। इसकी भूमिका में वह कुरान के सत्रहवें सूरे की पन्द्रहवीं आयत से साक्ष्य पेश करते हुए लिखता है, "कुरान शरीफ से यह मालूम होता है कि कोई कौम ऐसी नहीं है जिसके पास कोई ग्रंथ न हो और उन में ईशदूत न भेजे गए हों।" इसके साथ वह कहता है कि सूरा वकियात की आयत संख्या 78 में जिस 'किताबिम-मक्नूनिन' अर्थात् गुप्त-पुस्तक की ओर संकेत है वह उपनिषद् ही है। वह मजीद कहता है, "यह आयत जुबुर, तौरेत और इंजील (बाइबल) के बारे में नहीं है और लफ्ज तंजील से ऐसा प्रकट होता है कि यह लौह ए महफूज के संबंध में भी नहीं है।

दारा शिकोह ने एक बहुत महत्वपूर्ण बात भूमिका में लिखी है कि उपनिषद् के अनुवाद से पूर्व जब उसने शकुन निकाला तो कुरान शरीफ के सूरा आराफ की वे आयतें सामने आईं जो पैगंबर (स) को संबोधित करते हुए इस तरह शुरू होती हैं : अलिफ, लाम, मीम, साद, ये पुस्तक है,जो आपकी ओर उतारी गई है। अतः (हे नबी) आपके मन में इससे कोई संशय न हो,ताकि आप इसके द्वारा लोगों को सावधान करें और ईमान वालों के लिए उपदेश है।